CENGAGE

Cengage EXAM CRACK Series®

प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास और संस्कृति

सिविल सेवा एवं राज्य स्तरीय सेवाओं की परीक्षाओं हेतु

प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी में उपयोगी

prepmate®

प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास और संस्कृति

सिविल सेवा एवं राज्य स्तरीय सेवाओं की परीक्षाओं हेतु

CENGAGE

Australia • Brazil • India • Mexico • Singapore • United Kingdom • United States

CENGAGE

प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास और संस्कृति

© 2019 Cengage Learning India Pvt. Ltd.

ALL RIGHTS RESERVED. No part of this work covered by the copyright herein may be reproduced, transmitted, stored, or used in any form or by any means graphic, electronic, or mechanical, including but not limited to photocopying, recording, scanning, digitizing, taping, Web distribution, information networks, or information storage and retrieval systems, without the prior written permission of the publisher.

For permission to use material from this text or product, submit all requests online at
www.cengage.com/permissions

Further permission questions can be emailed to
India.permission@cengage.com

ISBN-13: 978-93-86668-88-2
ISBN-10: 93-86668-88-2

Cengage Learning India Pvt. Ltd.
418, F.I.E., Patparganj
Delhi 110092

Cengage Learning is a leading provider of customized learning solutions with office locations around the globe, including Australia, Brazil, India, Mexico, Singapore, United Kingdom and United States. Locate your local office at: **www.cengage.com/global**

Cengage Learning products are represented in Canada by Nelson Education, Ltd.

For product information, visit **www.cengage.co.in**

विषय वस्तु

प्राक्कथन *xvii*
आभार-पूर्ति *xix*
वीडियो-सूची *xxi*
पिछले वर्षों के प्रश्नों का अध्याय अनुसार विश्लेषण *xxii*

इकाई 1: भारत का प्राचीन इतिहास

1 **पूर्व ऐतिहासिक युग** 3
पुरापाषाण युग (500,000-10,000 ईसा पूर्व) 3
निम्न पुरापाषाण युग (500,000-60,000 ईसा पूर्व) *4*
मध्य पुरापाषाण युग (60,000-50,000 ईसा पूर्व) *4*
उच्च पुरापाषाण युग (50000-10000 ईसा पूर्व) *5*
मध्यपाषाण युग 6
नवपाषाण युग (10,000-4,500 ईसा पूर्व) 7
नवपाषाण संस्कृति से जुड़े स्थान *8*
अभ्यास प्रश्न 12

2 **सिंधु घाटी सभ्यता** 13
सिंधु घाटी सभ्यता 13
क्षेत्र *13*
नगर योजना और वास्तु-कला *14*
कृषि *17*
पालतू जानवर *18*
व्यापार *18*
वजन प्रणाली *18*

माप प्रणाली *19*
धार्मिक परंपराएं *19*
मृत शरीर को दफन करने की प्रथा *21*
प्रौद्योगिकी *21*
मुहरें और टेराकोटा *21*
राज्यव्यवस्था और समाज *22*
सिंधु घाटी की लिपि *26*
सिंधु घाटी सभ्यता का पतन *26*
अभ्यास प्रश्न 29
पिछली प्रारंभिक परीक्षा 29

3 पूर्व वैदिक काल 31

वैदिक काल 31
आर्य लोग कहाँ से आए थे? *31*
भारत में आर्य किन हिस्सों में बसे थे? 31
प्रारंभिक वैदिक काल (1500–1000 ई.पूर्व) 33
व्यापार और अर्थव्यवस्था *33*
पालतू जानवर *34*
धर्म *34*
राजनीतिक व्यवस्था *35*
सेना *36*
समाज *36*
वैदिक साहित्य 37
श्रुति *37*
स्मृति *38*
वेद *38*
अभ्यास प्रश्न 41
पिछली प्रारंभिक परीक्षा 42

4 उत्तर वैदिक काल 43

उत्तर वैदिक काल 43
क्षेत्र *43*
राजनीतिक व्यवस्था *44*
उत्तर वैदिक काल की प्रशासनिक व्यवस्था *44*
उत्तर वैदिक काल का सामाजिक वर्गीकरण: वर्ण प्रणाली का जन्म *44*
आश्रम प्रणाली *45*
गोत्र व्यवस्था *46*

उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति *46*
अर्थव्यवस्था *46*
उत्तर वैदिक काल के देवता *47*
वैदिक काल का अंत *47*
अभ्यास प्रश्न 48
पिछली प्रारंभिक परीक्षा 48

5 धर्म और दर्शन–I 49

छह आस्तिक दर्शन संप्रदाय 49
सांख्य संप्रदाय *49*
योग संप्रदाय *50*
न्याय संप्रदाय *50*
वैशेषिक संप्रदाय *51*
मीमांसा संप्रदाय *51*
वेदांत संप्रदाय *51*
नास्तिक दर्शन संप्रदाय 52
लोकायत दर्शन या चार्वाक संप्रदाय *53*
जैन धर्म *53*
बौद्ध धर्म *58*
बौद्धिष्ठित्वा *66*
शैववाद *67*
भगवतवाद–वैष्णववाद *69*
अभ्यास प्रश्न 71
पिछली प्रारंभिक परीक्षा 73

6 महाजनपद 76

महाजनपद 76
महाजनपदों का गठन *77*
महाजनपद *77*
हर्यक राजवंश (544 ई.पू. से 413 ई.पू.) *82*
शिशुनाग राजवंश (413–345 ई.पू.) *84*
नंद राजवंश (345–321 ई.पू.) *85*
गणतंत्र और राजतंत्र *86*
राजतंत्र *87*
अभ्यास प्रश्न 88

7 **मौर्य साम्राज्य** 89

मौर्य काल 89

मौर्य साम्राज्य के महत्त्वपूर्ण शासक 89

मौर्य साम्राज्य काल का सामाजिक जीवन 93

मौर्यों की शासन कला 93

धर्म 98

मौर्य साहित्य 99

अशोक के शिलालेख 100

मौर्य साम्राज्य का पतन 101

अभ्यास प्रश्न 104

पिछली प्रारंभिक परीक्षा 106

8 **उत्तर–मौर्य काल** 107

उत्तर–मौर्य काल 107

मध्य एशिया के राजवंश 107

भारतीय–यूनानी/बैक्ट्रिया यूनानी 107

शक/सक/इंडो–सिथियन 108

पार्थ/पार्थिया/पार्थियन 109

कुषाण 110

मध्य एशियाई राजवंशों का महत्त्व 111

उत्तर–भारत के राजवंश 113

शुंग (185–73 ई.पू.) 113

कण्व (72–27 ई.पू.) 114

उत्तर के राजवंशों का महत्त्व 115

चेदि राजवंश 116

दक्षिणी और मध्य भारत के सातवाहन 116

सातवाहन राजवंश का महत्त्व 118

अभ्यास प्रश्न 120

पिछली प्रारंभिक परीक्षा 121

9 **अति दक्षिण भारत का इतिहास** 122

मेगालिथिक (महापाषाण) संस्कृति (1000 ई.पू. से 100 ईसवी तक) 122

संगम काल (लगभग तीसरी शताब्दी ई.पू. से तीसरी शताब्दी ईसवी तक) 123

संगम साहित्य 123

अन्य स्रोत 125

राजनीतिक इतिहास 126

प्रशासन *127*
समाज *128*
अर्थव्यवस्था *129*
संगम युग का अंत *130*
अभ्यास प्रश्न 130

10 गुप्त साम्राज्य **132**

गुप्त साम्राज्य 132
श्री गुप्त (लगभग 240–280 ई.) *132*
घटोत्कच/ घटोत्कच्छ (लगभग 280–319 ई.) *132*
चंद्रगुप्त प्रथम (320–335 ई.) *132*
समुद्रगुप्त (335–380 ई.) *133*
चंद्रगुप्त द्वितीय (380–415 ई.) *135*
कुमारगुप्त प्रथम (415–455 ई.) *137*
गुप्त साम्राज्य का पतन *137*
गुप्त प्रशासन 138
राजकीय कर *139*
गुप्तकालीन समाज 139
जाति व्यवस्था *140*
समाज में महिलाओं की स्थिति *140*
धर्म *140*
साहित्य *140*
वैज्ञानिक साहित्य *141*
धार्मिक साहित्य *141*
अभ्यास प्रश्न 142
पिछली प्रारंभिक परीक्षा 143

11 गुप्तोत्तर काल **144**

वाकाटक राजवंश 144
वाकाटक वंश के महत्त्वपूर्ण शासक *144*
गुप्तोत्तर काल 146
नई शक्तियां 146
यशोधर्मन (528–543 ई.) *146*
मौखरि वंश (550 ई. से 8वीं सदी ई. तक) *146*
उत्तरगुप्त शासक (6वीं शताब्दी ई. से 7वीं शताब्दी ई.) *147*
क्षेत्रीय शक्तियां 147
वर्मन वंश *147*

मैत्रक राजवंश *147*
गौड़ राजवंश *148*
पुष्यभूति वंश (6वीं शताब्दी से 7वीं शताब्दी) *148*
चालुक्य वंश (535–566 ई.) *152*
प्रतीच्य चालुक्य (बादामी चालुक्य) *152*
पल्लव राजवंश (3–9वीं शताब्दी ई.) *153*
अभ्यास प्रश्न 156
पिछली प्रारंभिक परीक्षा 157

इकाई 2: भारत का मध्यकालीन इतिहास

12 हर्षवर्धन के बाद का भारत 161
विभिन्न राजवंशों का युग 161
राष्ट्रकूट (735–973 ई.) *162*
सांस्कृतिक योगदान *164*
सोलंकी वंश (लगभग 942–1243 ई.) *165*
गहड़वाल या गढ़वाल वंश (11वीं–12वीं शताब्दी) *166*
चौहान या चह्मान वंश (लगभग 957–1192 ई.) *166*
प्रतिहार वंश (730–1036 ई.) *166*
चंदेल वंश (9वीं और 13वीं शताब्दी के बीच) *167*
सेन वंश (लगभग 1070–1230 ई.) *168*
पाल वंश (लगभग 750–1150 ई.) *168*
कश्मीर 169
कर्कोट वंश *169*
उत्पल वंश *169*
पूर्व गुप्त वंश *169*
दक्षिण के साम्राज्य 169
कल्याणी के पश्चिमी (प्रतीच्य) चालुक्य (973–1189 ई.) *170*
काकतीय वंश (1110–1326 ई.) *170*
यादव वंश (1187– लगभग 1312 ई.) *171*
होयसल वंश (लगभग 1026– लगभग 1342 ई.) *171*
नया चोल वंश (लगभग 850–1298 ई.) *171*
अभ्यास प्रश्न 176
पिछली प्रारंभिक परीक्षा 177

13 भारत पर इस्लामों का आक्रमण 178
अरब की सिंध पर विजय, दिल्ली सल्तनत 178

अरब की सिंध पर विजय (712 ई.) *178*
भारत पर गजनवी के मुहम्मद का आक्रमण *178*
मोहम्मद ग़ोरी *179*
तुर्कियों की सफलता के कारण *180*
दिल्ली सल्तनत 180
ग़ुलाम वंश (1206–1290 ई.) 180
कुतुबुद्दीन ऐबक (1206–1210 ई.) *181*
इल्तुतमिश (1211–1236 ई.) *181*
रज़िया सुल्तान (1236–1240 ई.) *182*
बलबन (1266–1287 ई.) *183*
खिलजी वंश (1290–1320 ई.) 183
जलालुद्दीन खिलजी *183*
अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316 ई.) *183*
मुबारक खिलजी *185*
तुग़लक़ वंश (1320–1414 ई.) 185
गयासुद्दीन तुग़लक़ (1320–1325) *185*
मुहम्मद बिन तुग़लक़(1325–1351 ई.) *185*
फ़िरोज़ तुग़लक़ (1351–1388 ई.) *187*
सैयद वंश(1414–1451 ई.) 188
लोदी वंश (1451–1526 ई.) 188
बहलोल लोदी (1451–1488) *188*
सिकंदर लोदी (1489–1517) *188*
इब्राहिम लोदी (1517–1526) *189*
अभ्यास प्रश्न 189

14 धर्म और दर्शन–II **192**
इस्लाम 192
सूफ़ीवाद 193
भारत के प्रमुख सूफ़ी संत *194*
ख़्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती (1142–1235) *194*
कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी (लगभग 1236 में इनका देहांत हुआ) *194*
हमीदुद्दीन नागौरी *194*
निजामुद्दीन औलिया (1236–1325) *195*
अमीर खुसरो (1252–1325) *195*
नसीरूद्दीन मुहम्मद (लगभग 1365 में इनका देहांत हुआ) *195*
बहाउद्दीन ज़कारिया (1182–1262) *195*
भक्तिवाद 196

आदि शंकर (लगभग 788–820) *196*
रामानुज आचार्य (1017–1137) *197*
निम्बार्क *197*
मध्वाचार्य (1238–1317) *198*
वल्लभाचार्य (1479–1531) *198*
सूरदास (लगभग 1483–1563) *198*
रामानंद (लगभग 1400–1470) *198*
कबीर (लगभग 1440–1518) *199*
मीरा बाई (1498–1546) *201*
चैतन्य (1486–1534 *201*
तुलसीदास (लगभग 1532–1623) *201*
बीरभान *201*
दादू दयाल (1544–1605) *202*
सुंदर दास (1596–1689) *202*
शंकर देव (1449–1568) *202*
रसखान (1548–1628) *202*
त्यागराज (1767–1847) *202*
मराठी भक्तिवाद 202
ज्ञानेश्वर (या ज्ञानदेव/ज्ञानेश्व) (1275–1296) *203*
एकनाथ (1533–1599) *203*
नामदेव (1270–1350) *203*
तुकाराम (1608–1650) *203*
समर्थ रामदास (1608–1681) *203*
अभ्यास प्रश्न 204
पिछली प्रारंभिक परीक्षा 205

15 दिल्ली सल्तनत के पतन के बाद के राजवंश 207
विजयनगर और बहमनी साम्राज्य 207
हुसैन शाही वंश, बंगाल (1494–1538) *207*
शर्की राजवंश, जौनपुर, उत्तर प्रदेश (1394–1497) *207*
मुज़फ्फरिद वंश/ बहादुर शाही वंश, गुजरात (1391–1573) *208*
शाह मीर राजवंश, कश्मीर (1339–1561) *209*
विजयनगर साम्राज्य 209
संगम राजवंश (1336–1485) *211*
सालुव वंश (1486–1505) *212*
तुलुव वंश (1505–1570) *212*
अच्युत देव राय (1529–1542) *213*
अरविदु वंश (1542–1646) *214*

तिरुमल राय *214*

बहमनी साम्राज्य 214

बीजापुर: आदिल शाही वंश *215*

बीदर: बरीदशाही वंश *216*

बेरार: इमादशाही वंश *216*

अहमदनगर: निज़ामशाही वंश *216*

गोलकुण्डा: कुतुबशाही वंश *216*

अभ्यास प्रश्न 217

पिछली प्रारंभिक परीक्षा 218

16 मुगल साम्राज्य **219**

बाबर (1526–1530) *219*

हुमायूँ (1530–1540), (1555–1556) *221*

सूरी वंश/सूरी राज्य (1540–1555) *222*

अकबर *224*

जहाँगीर (1605–1627) *229*

शाहजहाँ (1628–1658) *230*

औरंगज़ेब (1658–1707) *231*

बाद के मुगल *233*

अभ्यास प्रश्न 235

पिछली प्रारंभिक परीक्षा 238

17 मराठा साम्राज्य **239**

शिवाजी (लगभग 1630–1680) *239*

सम्भाजी (1680–1689) *241*

राजाराम (1689–1700) *242*

ताराबाई (1700–1709) *242*

पेशवा का समय (1713–1818) 242

बालाजी विश्वनाथ (1713–1720) *242*

बालाजी बाजी राव (1740–1761) *243*

माधव राव प्रथम (1761–1772) *245*

अभ्यास प्रश्न 245

18 क्षेत्रीय राज्यों का उदय **247**

मुगलों का पतन *247*

क्षेत्रीय शक्तियों का उदय *248*

वतन जागीर *249*

बंगाल *250*
अवध/औध *250*
हैदराबाद और कर्नाटक *250*
सिख *251*
मराठे *251*
जाट *251*
रोहिल्ला *251*
मैसूर *251*
त्रावणकोर *252*
अभ्यास प्रश्न 252

इकाई 3: भारतीय संस्कृति

19 विज्ञान और प्रौद्योगिकी (तकनीक) 257
प्राचीन भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी 257
खगोल विज्ञान *257*
गणित *258*
रसायन विज्ञान *258*
चिकित्सा विज्ञान *259*
नौ-परिवहन (Navigation) *259*
मध्यकाल में विज्ञान और प्रौद्योगिकी 259
सल्तनत काल में विज्ञान और प्रौद्योगिकी *260*
मुगलों के अधीन विज्ञान और प्रौद्योगिकी *260*
महाराजा सवाई जय सिंह का खगोल विज्ञान में योगदान *260*
सिंचाई *262*
गणित *263*
फार्मेसी (औषधि विज्ञान) *263*
धातुकर्म *263*
राकेट (अग्निबाण) *263*
दमिश्क (डमास्कस) इस्पात *264*
तोप ढलाईखाना *264*
प्राचीन भारतीय इतिहास के महत्त्वपूर्ण खगोलविद् और गणितज्ञ 264
आर्यभट्ट (476-550 ई.) *264*
वराहमिहिर (505-587 ई.) *264*
ब्रह्मगुप्त (598-670 ई.) *265*
भास्कर प्रथम (600-680 ई.) *265*
बौधायन (8वीं शताब्दी ई.पू.) *265*
महावीराचार्य (9वीं शताब्दी) *265*
भास्कराचार्य (1114-1185) *266*

अभ्यास प्रश्न 266
पिछली प्रारंभिक परीक्षा 267

20 कला और वास्तुकला 269

मौर्यकालीन कला एवं वास्तुकला (321 ई. पू. – 185 ई. पू.) 269
सारनाथ स्तंभ 270
शाही भवन 271
स्तूप 272
गुफाएं 273
मूर्ति कला 274
उत्तर-मौर्यकालीन वास्तुकला 275
रॉक-कट गुफाएं 275
कार्ले गुफ़ाएँ 276
त्रिरश्मी बौद्ध गुफाएं 279
स्तूप 280
मूर्तिकला 280
गुप्तकालीन कला और वास्तुकला (लगभग 240–455) 282
गुफ़ाएं 282
अजंता गुफाएं 283
एलोरा गुफाएं 284
बाघ गुफ़ाएँ 286
स्तूप 286
मूर्तिकला 287
मंदिर वास्तुकला 288
हिन्दू मन्दिरों का वर्गीकरण 291
नागर शैली के मुख्य मंदिर 293
द्रविड़ शैली के प्रमुख मंदिर 296
वेसर शैली के प्रमुख मंदिर 300
उत्तर गुप्त काल की गुफाएं 304
भारतीय-इस्लामिक वास्तुकला 306
ट्रेबीट और आर्कुएट (Trabeate and Arcuate) 306
ट्रेबिट और आर्कुएट शैलियों में अंतर 307
भारतीय-इस्लामिक वास्तुकला की विशेषताएँ 308
दिल्ली सल्तनत के अधीन वास्तुकला 311
मुगल काल में वास्तुकला 314
औपनिवेशिक कला और वास्तुकला 316
भारत में स्थित महत्त्वपूर्ण बौद्ध मठों की सूची 318

	भारत में यूनेस्को सांस्कृतिक विश्व धरोहर स्थलों की सूची	319
	अभ्यास प्रश्न	321
	पिछली प्रारंभिक परीक्षा	324
21	**चित्रकला**	**328**
	चित्रकला	328
	भारतीय चित्रकला के षडंग (छह अंग)	*328*
	भारतीय चित्रकला का वर्गीकरण	328
	पूर्व ऐतिहासिक शिलाचित्र	329
	भित्ति चित्रकला (म्यूरल पेंटिंग)	330
	लघु चित्रकला (मिनिएचर पेंटिंग)	331
	फारसी चित्रकला	*332*
	मुगल चित्रकला	*332*
	दक्कन चित्रकला शैली	*336*
	राजस्थानी चित्रकला शैली/राजपूत चित्रकला	*330*
	कोटा	*338*
	चित्रकला की पहाड़ी शैली	*341*
	लोक चित्रकला	344
	कालीघाट चित्रकला, कलकत्ता	*344*
	मधुबनी चित्रकला, बिहार	*345*
	फड़ चित्रकला : स्क्रॉल पेंटिंग (भीलवाड़ा, राजस्थान)	*346*
	कलमकारी चित्रकला	*346*
	कोलम चित्रकला, केरल	*347*
	वारली चित्रकला, महाराष्ट्र	*348*
	अभ्यास प्रश्न	349
	पिछली प्रारंभिक परीक्षा	350
22	**शास्त्रीय नृत्य**	**352**
	नृत्य	352
	नृत्य के अंग	*352*
	क्लासिक/ शास्त्रीय नृत्य	353
	शास्त्रीय नृत्यों की उत्पत्ति	*353*
	भरतनाट्यम	353
	कथकली	355
	कथक	357

कुचिपुड़ी 358

मणिपुरी 359

मोहिनीअट्टम 361

ओडिसी 362

सत्रिया 363

अभ्यास प्रश्न 364

पिछली प्रारंभिक परीक्षा 365

23 शास्त्रीय संगीत 367

संगीत-संरचना 367

शास्त्रीय संगीत 367

हिन्दुस्तानी संगीत 368

कर्नाटक संगीत 369

अभ्यास प्रश्न 370

पिछली प्रारंभिक परीक्षा 371

24 लोक कला 372

लोक नृत्य, संगीत, रंगमंच, और मार्शल आर्ट्स 372

पंजाब 372

हरियाणा 374

हिमाचल प्रदेश 376

जम्मू और कश्मीर 378

राजस्थान 379

उत्तराखंड 381

उत्तर प्रदेश 381

असम 382

मणिपुर 383

पश्चिम बंगाल 386

ओडिशा 386

सिक्किम 388

मिज़ोरम 388

त्रिपुरा 389

अरुणाचल प्रदेश 390

नागालैंड 391

गोवा 392

गुजरात 393

महाराष्ट्र *395*
मध्य प्रदेश *396*
छत्तीसगढ़ *398*
झारखंड *398*
बिहार *399*
केरल *400*
कर्नाटक *402*
तमिलनाडु *403*
आंध्र प्रदेश *405*
पुडुचेरी *406*
अभ्यास प्रश्न 406
पिछली प्रारंभिक परीक्षा 407

25 विविध विषय 409
कैलेंडर 409
विक्रम संवत् *409*
शक् संवत् *410*
हिजरी कैलेंडर *410*
ग्रेगेरियन कैलेंडर *410*
शास्त्रीय भाषा 411
भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त करने वाली शास्त्रीय भाषाएँ *411*
अभ्यास प्रश्न 412
पिछली प्रारंभिक परीक्षा 412

अभ्यास प्रश्नों तथा पिछली प्रारंभिक परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों के समाधान *415*
मुख्य परीक्षा में उत्तर लिखने की रणनीति *427*
पिछले वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा) समाधान के साथ *435*

प्राक्कथन

आईएएस बनने का सपना अपनी आंखों में संजोए 'कई' उम्मीदवारों से आपकी मुलाकात या परिचय हुआ होगा, जो कई वर्षों से इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए तत्पर हैं और उनकी इसके प्रति प्रतिबद्धता भी निरंतर बनी हुई है। हालांकि, 'कई' शब्द इनकी व्याख्या करने के लिए काफी नहीं होगा, क्योंकि इनकी संख्या लाखों में है। लेकिन जब हम प्रतिबद्धता की बात करते हैं, तो हम इसके अर्थ को भलीभांति समझते भी हैं और इसका आदर भी करते हैं। ये युवा पुरुष और महिलाएं इस सपने को पूरा करने के लिए अपने सारे कीमती युवा वर्षों का बलिदान करने के लिए तैयार हैं, जिसके साथ-साथ यह अपनी नींद, आराम और यहां तक कि सामान्य जीवन का त्याग करने को भी तैयार हैं और उनके इस त्याग का केवल एकमात्र लक्ष्य है–**भारतीय प्रशासनिक सेवाएं।**

अफसोस की बात यह है कि अध्ययन के अंतहीन घंटों और नींद से सराबोर नजरों के बावजूद इन उम्मीदवारों की बड़ी संख्या यह सपना पूरा करने से कोसों दूर है। जब हमने यह जानने का प्रयास किया कि '**ऐसा क्यों है**', प्रतिक्रियाएं लगभग समान थीं।

"विषय इतना विशाल था कि पढ़ने के लिए बहुत कुछ था और मैं इसे कभी पूरा नहीं कर सका।."

"मैंने बहुत कुछ पढ़ा लेकिन उसे याद नहीं रख सका।."

"मैंने पढ़ा कुछ और, लेकिन परीक्षा में पूछा कुछ और गया।."

"मैंने पढ़ना जारी रखा लेकिन पिछले वर्षों के प्रश्न पत्रों को हल करने या अभ्यास परीक्षा देने का प्रयास नहीं किया।."

"तैयारी/जानकारी प्राप्त करने के लिए कई स्रोत जैसे कि किताबें, कोचिंग क्लास और इंटरनेट का अनुसरण करना मुश्किल था; आखिर दिन में केवल 24 घंटे होते हैं।"

"मेरी अलमारी बहुत सारी किताबों से भरी हुई थी, लेकिन मैं मुश्किल से कुछ को ही पूरा कर पाया था।."

ऊपर कहे गए सभी कथनों ने हमें स्पष्ट रूप से एक चुनौतीपूर्ण समस्या पेश की, परंतु हमने इसे ना केवल हल करने का प्रयास किया, बल्कि हमने समग्र समाधान पर ध्यान केंद्रित किया, जो थे–विद्वत्ता हासिल करना और सकारात्मक परिणाम प्राप्त करना।

यह इस उद्देश्य के साथ है कि हमने–PrepMate, Cengage India के साथ मिलकर–एक व्यापक शिक्षण मॉडल विकसित किया है जो प्रिंट और डिजिटल माध्यम का संयोजन है ताकि अधिकांश उम्मीदवारों के उपर्युक्त मुद्दों को प्रभावी ढंग से संबोधित किया जा सके।

प्रिंट-डिजिटल मॉडल के बारे में

यह मॉडल यूपीएससी परीक्षा को उत्तीर्ण करने के लिए पुस्तकों की एक श्रृंखला प्रदान करता है। निम्नलिखित अनूठी विशेषताओं के कारण यह पुस्तकें अन्य उपलब्ध पुस्तकों से अलग हैं:

- हम एक वैचारिक दृष्टिकोण रखते हैं, सरल भाषा का उपयोग करते हैं, आरेखों के माध्यम से अवधारणाओं की व्याख्या करते हैं, पर्याप्त उदाहरण उद्धृत करते हैं, एक पाठक अनुकूल प्रारूप में प्रासंगिक प्रश्न पूछते हैं—यह सुनिश्चित करने के लिए कि इन पुस्तकों को समयबद्ध तरीके से पढ़ा और समेकित किया जा सके।
- हाल ही के वर्षों में यूपीएससी परीक्षाओं की प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए विषय सामग्री विशेष रूप से बनाई गई है। हमने प्रत्येक अध्याय के पश्चात पिछले वर्षों के प्रश्न (समाधान के साथ) भी शामिल किए हैं।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में अभ्यास प्रश्न दिए गए हैं जो परीक्षा की पूर्ण तैयारी करने के लिए पर्याप्त हैं।
- पुस्तक श्रृंखला में 'उत्तर कैसे लिखना है' के बारे में अतिरिक्त जानकारी भी शामिल है जिससे आपका मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए दृष्टिकोण विकसित होगा। हमने प्रश्नों को हल करके उत्तर लिखने का ढंग समझाया है और 'श्रेष्ठ उत्तर प्रस्तुत करने की शैली' भी सुझाई है।
- हमने एक विशिष्ट विषय पर विद्वत्ता प्राप्त करने के लिए सभी अध्याय-सामग्री को एक पुस्तक में समाहित करने का प्रयास किया है।

आम तौर पर, एक उम्मीदवार एक पुस्तक खरीदता है, लेकिन उसे लेखकों से संपर्क करने का अवसर कभी नहीं मिलता है। हमारा मानना है कि उम्मीदवारों और लेखकों के बीच संपर्क, उम्मीदवारों के विद्वत्ता प्राप्त करने और प्रेरणा के लिए महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि हमने आपके प्रश्नों के उत्तर देने के लिए एक एप्लीकेशन और एक वेब पोर्टल विकसित किया है जो आपको आपकी तैयारी के दौरान निरंतर समर्थन प्रदान करता है।

यह इस डिजिटल तत्व के माध्यम से है कि हम निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करते हैं:

1. महत्वपूर्ण और कठिन विषयों पर वीडियो
2. उत्तर लेखन अभ्यास
3. दैनिक प्रारंभिक परीक्षा से संबंधित प्रश्नोत्तरी
4. साक्षात्कार की तैयारी में सहायता
5. नियमित अद्‌यतन
6. दैनिक सामयिकी मामले
7. मासिक सामयिकी मामलों पर पत्रिका
8. रेडियो समाचार विश्लेषण
9. शैक्षणिक वीडियो
10. पिछले वर्षों के प्रश्न पत्र और समाधान
11. नि: शुल्क अध्ययन सामग्री

आपके सपने को सफल करने की दिशा में हम आपके साथी बनने के लिए तत्पर हैं।

यदि आपका कोई विशिष्ट प्रश्न या रचनात्मक प्रतिक्रिया है, तो आप हमारे साथ info@prepmate.in पर ई-मेल के माध्यम से साझा कर सकते हैं।

PrepMate

आभार-पूर्ति

"हम जो कुछ भी पाना चाहते हैं वह हम एक साथ काम किए बिना प्राप्त नहीं कर सकते"

PrepMate द्वारा तैयार किया गया पूरा यूपीएससी मॉडल कई वर्षों का, बहुत से लोगों की लगातार उद्भावना और विचारावेश का परिणाम है। हम ईमानदारी से उनके मूल्यवान योगदान का धन्यवाद करते हैं। मैं, PrepMate Edutech का संस्थापक, शुभम सिंगला, आप सभी का इस पूरी परियोजना में मेरे साथ बने रहने के लिए आभारी हूं। रजिंदर पॉल सिंगला, निर्मल सिंगला, रमनिक जिंदल, शरत गुप्ता, सुभाष सिंगला और विजय सिंगला–आपके निरंतर समर्थन और प्रेरणा के लिए धन्यवाद।

हम मनींदर मान, सन्दीप सिंह गढ़ा को भी धन्यवाद देना चाहेंगे जिन्होंने पहली बार इस मॉडल की कल्पना करने में और फिर इस कल्पना को सहक्रियात्मक प्रिंट-डिजिटल मॉडल का प्रारूप देने में हमारी मदद की–बिना आपके हम अपने प्रतिस्पर्धात्मक आधार को विकसित करने में अक्षम रहते।

रणनीति का कार्यान्वयन अक्सर चुनौतीपूर्ण साबित हो सकता है और डिजिटल घटक का विकास हमारी कल्पना की तुलना में काफी कठिन साबित हुआ। लेकिन हमारी तकनीकी टीम हमारे सपनों को सक्षम करने और सर्वोत्तम प्रदर्शन प्रदान करने पर केंद्रित थी और उन्होंने निश्चित रूप से इसे पूरा किया। वेबसाइट और एप्लिकेशन दोनों के परीक्षण के लिए एक विशिष्ट उल्लेख के साथ, हम सुरभि मिश्रा, पार्थ और तनवीर को धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने कठिनाइयों के बावजूद धैर्यपूर्वक और प्रभावी ढंग से अपना कार्य किया।

हमारी ग्राफिक्स डिज़ाइन टीम, संदीप, सुखजिंदर और रोशनी, की सहायता के बिना हमारी वीडियो और पुस्तकें संभव नहीं हो सकतीं थीं, जिन्होंने बनाए गए ऑडियो-विज़ुअल की सर्वश्रेष्ठता को सुनिश्चित करने के लिए अंतहीन रूप से कार्य किया।

यह कहना काफी नहीं होगा कि मौजूदा विषय सामग्री का उद्गम और निरीक्षण तथा अनुपलब्ध विषय सामग्री की उत्पत्ति, इस परियोजना का कितना महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और हमारे अध्ययन मॉडल का मूलभूत आधार हैं। विषय सामग्री योगदानकर्ताओं की हमारी टीम के बिना यह संभव नहीं था: ईशा गुप्ता, शैली जिंदल, गुरदीप कौर, सुरभि मिश्रा, शैफी गर्ग, दीपिका अरोड़ा, सुनील, भूपिंदरजीत सिंह, शांतनु, तनवीर, अनमोल, क्रिती, तान्या, साहिल, सूरज और दिलशाद, जिन्होंने उत्कृष्टता प्राप्त करने के अपने प्रयास में कोई कमी नहीं छोड़ी–आपके महत्वपूर्ण योगदानों को आभारी रूप से स्वीकार किया जाता है।

हम अपने कर्मचारियों, गीता, जितेंद्र, मनोज और पिंकी को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहते हैं, जिन्होंने हमें श्रमशील कार्य का निष्पादन करने में सहायता की, यानी हमारी हस्तलिखित किताबों को टाइप करना- आपके योगदान की ईमानदारी से सराहना की जाती है।

यह अत्यावश्यक है कि हम ईशा गुप्ता, शैली जिंदल, अंजुम दीवान, राजेश गोयल, शिखा शर्मा और रविंदर इंदौरा को उनकी आलोचनात्मक पर रचनात्मक प्रतिक्रिया के लिए तथा विकास प्रक्रिया के दौरान, बाद में की गई त्रुटियों की पहचान तथा सुधार करने के लिए धन्यवाद दें।

हम इस पुस्तक को प्रकाशित करने की प्रक्रिया में Cengage India की पूरी संपादकीय टीम द्वारा पहल और समर्थन को ईमानदारी से स्वीकार करते हैं।

"अकेले हम कितना कम हासिल कर सकते हैं, साथ में कितना ज्यादा..."

PrepMate

वीडियो-सूची

1.	सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा और मुख्य परीक्षा के लिए प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास और संस्कृति कैसे तैयार करें?
2.	सिंधु घाटी सभ्यता
3.	धर्म और दर्शन-I
4.	महाजनपद
5.	मौर्य साम्राज्य
6.	गुप्त साम्राज्य
7.	दिल्ली सल्तनत
8.	मुगल साम्राज्य
9.	मंदिर वास्तुकला
10.	शास्त्रीय नृत्य

पिछले वर्षों के प्रश्नों का अध्याय अनुसार विश्लेषण

अध्याय	2018	2017	2016	2015	2014	2013	2012	2011	2010	2009	2008	2007	2006	कुल
प्राचीन इतिहास														
1. पूर्व ऐतिहासिक युग														
2. सिंधु घाटी सभ्यता		1				1		1						3
3. पूर्व वैदिक काल							1	1						2
4. उत्तर वैदिक काल					1									1
5. धर्म और दर्शन-I	2	1			1	3	1	1	1	2			1	13
6. महाजनपद														
7. मौर्य साम्राज्य							1							1
8. उत्तर मौर्य काल			1										1	2
9. अति दक्षिण भारत का इतिहास			1										1	2
10. गुप्त साम्राज्य													1	1
11. गुप्तोत्तर काल			1			1								2
मध्यकालीन युग का इतिहास														
12. हर्षवर्धन के बाद का भारत		1											1	2
13. भारत पर इस्लामों का आक्रमण														

14. धर्म और दर्शन-II					1	1	1							3
15. दिल्ली सल्तनत के पतन के बाद के राजवंश	1		1											2
16. मुगल साम्राज्य	1			1	1					1	1			5
17. मराठा साम्राज्य														
18. क्षेत्रीय राज्यों का उदय														
कला एवं संस्कृति														
19. विज्ञान और प्रौद्योगिकी (तकनीक)							1				1		1	3
20. कला और वास्तुकला	1	1		2	2	2	1			3		1	3	16
21. चित्रकला	1			1		1			1					4
22. शास्त्रीय नृत्य					1	1	1							3
23. शास्त्रीय संगीत							1							1
24. लोक कला	1	1			3					1				6
25. विविध विषय				1	2									3
कुल	**7**	**5**	**4**	**5**	**12**	**10**	**8**	**3**	**2**	**7**	**2**	**1**	**9**	**75**

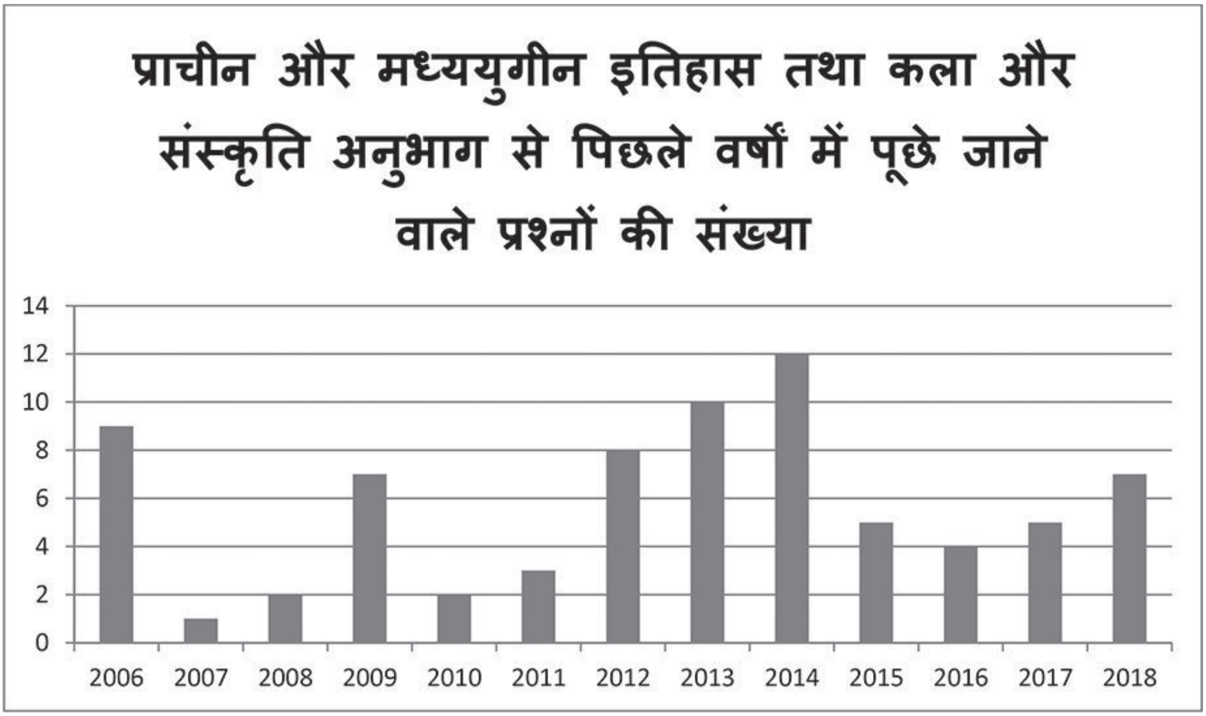
प्राचीन और मध्ययुगीन इतिहास तथा कला और संस्कृति अनुभाग से पिछले वर्षों में पूछे जाने वाले प्रश्नों की संख्या
0
2
4
6
8
10
12
14
2006
2007
2008
2009
2010
2011
2012
2013
2014
2015
2016
2017
2018

इकाई 1

भारत का प्राचीन इतिहास

अध्याय

1

पूर्व ऐतिहासिक युग

इस युग को पूर्व ऐतिहासिक युग के नाम से क्यों जाना जाता है

वस्तुत: पूर्व ऐतिहासिक एक गलत शब्द है क्योंकि इतिहास से पुराना कुछ भी नहीं हो सकता।

इतिहास ब्रह्मांड जितना ही पुराना है। हम पूर्व ऐतिहासिक शब्द का उपयोग उस युग के लिए करते हैं, जब लिखित परिचय उपलब्ध नहीं था। हमें इस युग के इतिहास के बारे में औजारों और अवशेषों से पता चलता है। दूसरे शब्दों में कहें तो लिखने की खोज से ही मानवीय इतिहास का असल प्रारंभ माना जाता है।

ब्रह्मांड 13.8 अरब वर्ष पुराना है, जबकि पृथ्वी 4.5 अरब वर्ष पुरानी है। मनुष्य के सबसे पुराने अवशेष (लगभग 42 लाख साल पुराने) अफ्रीका में पाए गए हैं। मनुष्य भारत में अफ्रीका से ही आया है। लगभग 500,000 वर्ष पुराने पत्थर के औजार पल्लावरम और अतिरंपक्कम, तमिलनाडु में पाए गए हैं।

पूर्व ऐतिहासिक युग को तीन भागों में बांटा जाता है:

1. पुरापाषाण युग (Palaeolithic Age)
2. मध्यपाषाण युग (Mesolithic Age)
3. नवपाषाण युग (Neolithic Age)

पुरापाषाण युग (500,000-10,000 ईसा पूर्व)

पुरापाषाण युग में मनुष्य पत्थर जैसे कि क्वार्ट्ज़ाइट के औजारों का उपयोग करता था। औजारों को बनाने में क्वार्ट्ज़ाइट का उपयोग करने के कारण मानव को इस युग में 'क्वार्ट्ज़ाइट मानव' भी कहा जाता है। इन औजारों का प्रयोग शिकार करने और बाकी रोजाना के कार्य करने के लिए किया जाता था।

आदि मानव को कृषि का ज्ञान नहीं था, इसलिए पूर्व ऐतिहासिक युग का मानव शिकारी, संग्रहकर्ता और घुमक्कड़ प्रवृत्ति का था। उसने उन प्राकृतिक गुफाओं को अपना घर बनाया जो पानी, छोटे जानवर, फल और अन्य खाने-पीने की चीजों के नजदीक थी।

पुरापाषाण युग को आगे तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। यह वर्गीकरण दो कारकों को ध्यान में रखते हुए किया गया है: लोगों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले पत्थर के औजारों की अपरिष्कृता और प्रबल जलवायु।

उच्च पुरापाषाण युग के तीन वर्ग इस प्रकार हैं:

1. निम्न पुरापाषाण युग (Lower Palaeolithic Age)
2. मध्य पुरापाषाण युग (Middle Palaeolithic Age)
3. उच्च पुरापाषाण युग (Upper Palaeolithic Age)

निम्न पुरापाषाण युग (500,000-60,000 ईसा पूर्व)

इस युग में मुख्य रूप से अपरिष्कृत औजारों का उपयोग होता था। उदाहरण के तौर पर पत्थर से बनी हुई कुल्हाड़ी और विदारक (Cleaver)। यह औजार ज्यादा तीखे नहीं होते थे । अधिकतर औजार क्वार्ट्ज़ाइट, शीस्ट और बेसाल्ट से बने होते थे । ऐसे औजार पूरे प्राचीन भारत में पाए गए हैं । उदाहरण के तौर पर-

1. सोन नदी घाटी (सोन नदी सिंधु नदी की उपनदी है), पाकिस्तान
2. अतिरंपक्कम और पल्लावरम, तमिलनाडु
3. बेलन नदी घाटी, उत्तर प्रदेश

गड़ासा

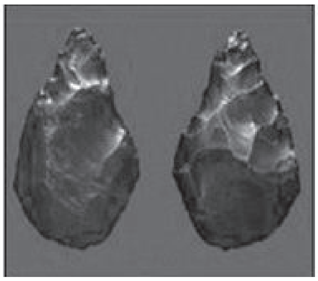

कुल्हाड़ी

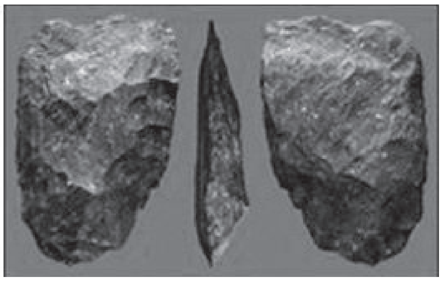

विदारक

इन औजारों के भंडार सिंधु, गंगा अथवा ब्रह्मपुत्र नदी घाटी में नहीं पाए गए हैं क्योंकि औजारों को बनाने के लिए इस जगह मजबूत सामग्री उपलब्ध नहीं थी । इस युग में होमिनाइड (Hominids) होते थे । होमिनाइड चार अंगों पर चलते थे और इनकी रीढ़ की हड्डी क्षैतिज थी। इस अवधि में होमो इरेक्टस (Homo Erectus) भी थे। होमो इरेक्टस वर्तमान मनुष्य की तरह दो पैरों पर चलते थे।

यह युग हिमयुग होने के कारण बहुत ठंडा था। इस युग में मनुष्य द्वारा आग का उपयोग करने के कुछ साक्ष्य भी मिलते हैं।

मध्य पुरापाषाण युग (60,000-50,000 ईसा पूर्व)

इस युग में उपयोग किए जाने वाले औजार निम्न पुरापाषाण युग के औजारों के मुकाबले में तीखे अथवा छोटे थे। औजार बनाने के लिए मूल सामग्री समान थी, परंतु नई सामग्री जैसे की कैल्सेडनी (सिलिका के रूप), एगेट (क्वार्ट्ज

परिवार का खनिज), जैस्पर (एक अपारदर्शी लाल-भूरे रंग का अर्धनीय पत्थर), आदि का भी इस्तेमाल किया गया। नए औजार बनाये गए जैसे कि खुरचनी, बोरर (खड्डा खोदने के लिए औजार), ब्लेड आदि। ये औजार बड़े पत्थरों पर से पपड़ी उतार कर बनाए जाते थे। इसी कारण मध्य पुरापाषाण उद्योगों को फ्लेक्स औजार उद्योग भी कहा गया है।

फ्लेक्स औजार

इन औजारों के भंडार निम्नलिखित स्थानों पर उपलब्ध हुए हैं:

1. नेवासा, जिला अहमदनगर, महाराष्ट्र
2. हुनसगी, जिला यादगीर, कर्नाटक
3. मध्य भारत में सोन और नर्मदा नदी घाटी
4. बेलन नदी घाटी, उत्तर प्रदेश
5. लूनी नदी घाटी, राजस्थान

इस युग में तापमान में बढ़ोतरी हुई। इस युग में होमो इरेक्टस (Homo Erectus) थे। होमो इरेक्टस अपनी टांगों पर सीधे खड़े हो सकते थे।

उच्च पुरापाषाण युग (50000-10000 ईसा पूर्व)

मध्य पुरापाषाण युग की तुलना में उच्च पुरापाषाण युग में प्रयोग किए जाने वाले औजार हल्के और छोटे थे । इन औजारों में ब्लेड, तक्षणी आदि भी शामिल हो गए थे। इस युग में चकमक पत्थर और हड्डियों द्वारा भी औजार बनाए गए।

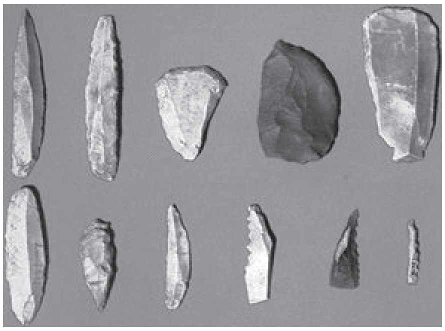

चकमक पत्थर के औजार

हड्डियों से बने औजार

इन औजारों के भंडार निम्नलिखित स्थानों पर पाए गए हैं:

1. कुर्नूल, आंध्र प्रदेश
2. भीमबेटका गुफाएं, मध्य प्रदेश
3. संघाओ गुफाएं, पाकिस्तान
4. बेलन नदी घाटी, उत्तर प्रदेश (चोपानी मांडो, इलाहाबाद जिले में पशुओं के अवशेष पाए गए हैं)
5. सोन नदी घाटी मध्य भारत में

उच्च पुरापाषाण युग का वातावरण मध्य पुरापाषाण युग के वातावरण की तुलना में गर्म था। इस युग में आधुनिक मानव होमो सेपियन (Homo Sapiens) की उपस्थिति थी। सबसे पुराने, चित्रकला के अवशेष इसी युग में पाए गए हैं । यह अवशेष भीमबेटका की गुफा से प्राप्त हुए हैं।

शुतुरमुर्ग के अंडों के अवशेष राजस्थान,मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के 40 से अधिक स्थानों में पाए गए हैं।शुतुरमुर्ग के अंडों के इन अवशेषों से हमें यह पता चलता है कि उच्च पुरापाषाण युग में शुतुरमुर्ग भारत के पश्चिमी भागों में आमतौर पर रहते होंगे।

उत्तर प्रदेश में बेलन नदी घाटी और मध्यप्रदेश में नर्मदा नदी घाटी पूर्व ऐतिहासिक युग की तीनों अवधियों (पुरापाषाण युग, मध्य पाषाण युग और नवपाषाण युग) की गवाह हैं।

मध्यपाषाण युग

इस युग के बारे में बहुत कुछ नहीं पता है, यह युग पुरापाषाण और नवपाषाण युग के बीच का चरण था। इस युग में मनुष्य प्रमुख रुप से शिकारी और जमाखोर था। मनुष्य बहुत छोटे (micro) औजारों का उपयोग करता था। यह औजार पत्थर (lith) से बने होते थे। इन औजारों को 'माइक्रोलिथ' (microliths) कहा जाता है। माइक्रोलिथ लंबाई में मात्र 0.5-1 इंच थे। छोटे औजारों से मनुष्य फुर्तीले जानवरों का भी शिकार कर पाता था। मछली को पकड़ने के लिए कांटा बनाया गया। इस युग में धनुष और बाण का पहली बार उपयोग किया गया।

पत्थर से बने हुए छोटे औजार

इस युग में वातावरण गर्म था। गर्म वातावरण में वनस्पति और जीवों का विकास हुआ । गर्म वातावरण के कारण मनुष्य दूसरे क्षेत्रों में विस्थापित हो पाया। मध्यपाषाण युग में मनुष्य ने प्राथमिक कृषि प्रारंभ कर दी थी। सबसे पहले गेहूं और जौ की खेती हुई। खेती के साथ मनुष्य जानवरों को भी पालता था। जानवरों को न केवल मांस के लिए, बल्कि कई अन्य उद्देश्यों के लिए पाला जाता था; उदाहरण के तौर पर परिवहन, खाल, दूध और कृषि में सहायता के लिए।

इस समय के महत्त्वपूर्ण स्थान हैं:

1. मध्य प्रदेश में आदमगढ़ और राजस्थान में बागोर (जानवरों के पालन-पोषण के शुरुआती प्रमाण पाए गए हैं)
2. राजस्थान में सांभर झील (आसपास के इलाकों में खेती के शुरुआती प्रमाण पाए गए हैं)

मध्यपाषाण युग के समाज में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव देखे गए। कृषि की खोज के कारण, अस्थायी बस्तियां खेतों के पास बनने लगीं। इन बस्तियों में कच्चे मकान थे। तूफान में यह मकान ढह जाते थे। इसी युग में मनुष्य ने पहली बार उचित कपड़े पहनना शुरू किया था। ये कपड़े जानवरों की खाल से बनाए जाते थे। अस्थाई बस्तियों के परिणामस्वरूप मृतकों का व्यवस्थित निपटान भी शुरू हो गया था। मृत व्यक्ति के साथ कब्र में कई चीजें दफना दी जाती थीं; जैसे कि औजार खाने पीने की चीजें आदि। ऐसी कब्रें बगोर (राजस्थान), लंघनाज (गुजरात), भीमबेटका (मध्य प्रदेश) आदि में पाई गई हैं।

यद्यपि मध्यपाषाण युग के दौरान खेती का एक प्राथमिक रूप देखा गया, लेकिन उचित खेती नवपाषाण युग के साथ ही शुरू हुई है।

नवपाषाण युग (10,000-4,500 ईसा पूर्व)

नवपाषाण युग (or New Stone age) में प्रवेश के साथ ही उल्लेखनीय विकास की शुरुआत हुई। संस्कृति, अर्थव्यवस्था, जीवन शैली और औजारों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा गया। नए औजार जैसे कि चाकू, खंजर, तीर, लंबे ब्लेड, भाले, कुल्हाड़ी इत्यादि बनाए जाने लगे। ये औजार विशिष्ट आर्थिक गतिविधियों के

लिए इस्तेमाल किए जाते थे। खुदाई में कुछ हड्डियों से बनी चीजें भी प्राप्त हुई हैं कंघियां, झुमके, सूइयां, हथौड़े इत्यादि पाए गए हैं

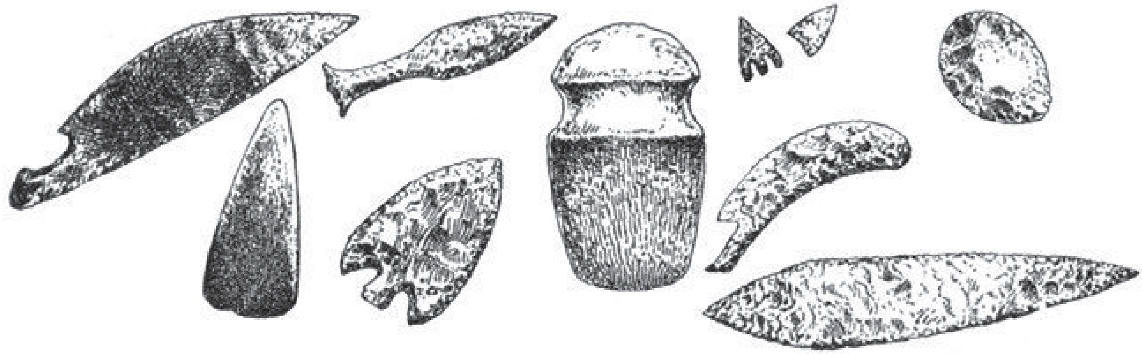

नवपाषाण युग के औजार

मनुष्य ने स्थाई कृषि के साथ एक व्यवस्थित जीवन जीना आरंभ किया। मनुष्य की बस्तियों के साथ जानवरों की हड्डियां पाई गई हैं। इन हड्डियों से यह पता चलता है कि विकसित होने के बाद भी मनुष्य ने जंगली जानवरों का शिकार करना नहीं छोड़ा था।

स्थायी कृषि के कारण लोगों ने आश्रय के लिए मजबूत ढांचे का निर्माण शुरू किया। यहां पर नरकुल और मिट्टी से बने मकान मिले हैं। इसके इलावा मनुष्य गड्ढों में भी घर बनाता था। इस युग में कच्ची या पक्की किसी भी तरह की ईंटों के इस्तेमाल संबंधी कोई साक्ष्य नहीं मिला है। खुदाई में घरों के अलावा, आग जलाने के लिए भट्टी और अनाज इकट्ठा करने के लिए गोदाम भी मिले हैं।

पर्याप्त भोजन होने के कारण, मानव अन्य व्यवसाय करने लगा था। मिट्टी के बर्तनों की खोज भी इसी युग में हुई। यह बर्तन उत्कृष्ट होते थे।यह बर्तन अक्सर लाल मिट्टी से बनाए जाते थे। शुरू-शुरू में बर्तन हाथ से बनाए जाते थे, फिर पहिए की खोज हुई और बर्तन पहिए पर बनाए जाने लगे। फिर धीरे-धीरे बर्तनों को आग में पकाकर भी बनाया जाने लगा। बर्तनों पर नक्काशी भी की जाने लगी थी।

नवपाषाण संस्कृति से जुड़े स्थान

उत्तर-पश्चिमी भारत उपमहाद्वीप (वर्तमान पाकिस्तान)

मेहरगढ़

- यह स्थान बलूचिस्तान, पाकिस्तान में है।
- यहाँ कृषि का पहला प्रमाण पाया गया है। यहां पर गेहूं और जौ की खेती का प्रमाण मिला है। यहां भेड़ों और बकरियों जैसे जानवरों को पाले जाने के प्रमाण भी मिले हैं। (8000-6000 ई.पू.)

किली गुल मोहम्मद

- यह स्थान भी बलूचिस्तान, पाकिस्तान में है।
- यहाँ नरकुल और मिट्टी से बने मकान मिले हैं ।
- यहाँ लाल और काली मिट्टी से बने बर्तन भी मिले हैं।

उत्तरी भारत

बुर्जहोम

- यह स्थान कश्मीर में है।
- यहाँ झील के किनारे गड्ढों में बने हुए घर मिले हैं।
- यहाँ असाधारण कब्रें मिली हैं। जानवरों को मनुष्यों के साथ दफनाया जाता था। कई कब्रों में सिर्फ जानवर ही मिले हैं। दफनाए हुए जानवरों में जंगली भेड़िए और पालतू जानवर जैसे कुत्ते, बकरियां और भेड़ें भी मिली हैं।

कनिष्कपुर

- यह स्थान बारामूला जिला, कश्मीर में है।
- यहाँ पर तांबे की बनी हुई काफी वस्तुएं मिली हैं; उदाहरण के तौर पर, चूड़ियां, सुइयां, नाक में पहनने वाला कोका इत्यादि।

मध्य भारत और मध्य गंगा घाटी

कोल्डिहवा और महागढ़

- दोनों जगह बेलन घाटी, उत्तर प्रदेश में हैं।
- यहाँ चावल की खेती का सबसे पुराना प्रमाण मिला है। यहां जले हुए चावल मिले हैं और चावल के भूसे से बने हुए बर्तन मिले हैं।

चिरांद

- यह स्थान सरयू और गंगा नदी के मिलन पर बिहार में है।
- यहाँ पुराने मकान मिले हैं। ये मकान गोलाकार अथवा अर्ध गोलाकार आकार के हैं।

चोपानी मांडो, बेलन घाटी, इलाहाबाद जिला, उत्तर प्रदेश में सबसे पुराने मिट्टी के बर्तनों के प्रमाण मिले हैं।

पूर्वी भारत

गोलबई सासन

- यह स्थान मंदाकिनी नदी के किनारे, ओडिशा राज्य में है।
- यहाँ हाथ से बने हुए मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं।

उत्तर पूर्वी भारत

दाओजली हार्डिंग

- यह स्थान उत्तर कछार पहाड़, असम में स्थित है।
- यहाँ पत्थर और लकड़ी से बने हुए औजार मिले हैं।
- हाथ से बने हुए मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ प्राचीन कृषि और पके हुए खाने के प्रमाण भी मिले हैं।
- यहाँ जेडाईट पत्थर मिला है, संभवत: यह पत्थर चीनी है।

दक्षिण भारत

दक्षिण भारत में नवपाषाण युग से जुड़ी सबसे ज्यादा बस्तियां मिली हैं। दक्षिण भारत के लोग कृषि करना जानते थे। राई (Ragi) की फसल सबसे पहले दक्षिण भारत में ही हुई थी।

इन बस्तियों की खास बात यह है कि निवास स्थानों के पास राख के टीले पाए गए हैं। राख के टीले असल में राख के बड़े-बड़े ढेर होते हैं। यह राख गाय का गोबर जलाने से पैदा होती थी। यह टीले संस्कार से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं। वर्तमान काल में भी दक्षिण भारत में ऐसी प्रथा जारी है। दक्षिण भारत में जवाहरात पर नक्काशी का भी प्रमाण मिलता है।

मृतक को दफनाने का रिवाज यहाँ भी था। कई कब्रों में औजार और बर्तन पाए गए हैं। ये कब्रें घरों के बीचों बीच ही होती थीं। शिशुओं को कलश में दफनाया जाता था।

उतनूर

- उतनूर तेलंगाना में एक स्थान है।
- यहाँ राख के टीलों पर जानवरों के पैरों के निशान पाए गए हैं।
- यहाँ खजूर की लकड़ी के प्रयोग का प्रमाण भी मिला है।

बुद्धहल

- यह स्थान कर्नाटक राज्य में है।
- यहाँ चार बस्तियां मिली हैं।
- यहाँ कसाई खाना भी मिला है।

हल्लूर

- यह स्थान भी कर्नाटक राज्य में है। यहाँ कई तरह के शस्त्र मिले हैं; उदाहरण के तौर पर चाकू, खंजर और तीर का ऊपरी हिस्सा।
- यहाँ काले और लाल रंग के बर्तन मिले हैं, जिन पर सफेद रंग से सजावट की गई थी।

पैय्यमपल्ली

- यह स्थान वेल्लोर जिला, तमिलनाडु में है।
- यहाँ गड्ढों में आवास के प्रमाण मिले हैं।
- यहाँ पर चने और मूंग की खेती का प्रमाण भी मिला है।

मस्की

- यह स्थान कर्नाटक राज्य में स्थित है।
- यहाँ पुरानी चित्रकारी का प्रमाण मिला है।
- चित्रकारी का विषय जानवर और मनुष्य थे।

अभ्यास प्रश्न

1. मानव को 'क्वार्ट्जाइट-मानव' किस युग में कहा जाता था?
   (a) पुरापाषाण युग
   (b) मध्यपाषाण युग
   (c) नवपाषाण युग
   (d) मध्य पुरापाषाण युग
2. किस क्षेत्र में तीनों युगों के प्रमाण मिले हैं?
   (a) चम्बल नदी घाटी
   (b) नर्मदा नदी घाटी
   (c) सतलुज नदी घाटी
   (d) गोदावरी नदी घाटी
3. पुरापाषाण युग के लोगों का व्यवसाय क्या था?
   (a) कृषि
   (b) बागवानी
   (c) पशुपालन
   (d) शिकार
4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. मध्य पाषाण युग में मनुष्य औजार इस्तेमाल करता था जो कि लगभग 1 फुट लंबे होते थे।
   2. मध्य पाषाण युग के औजार माइक्रोलिथ कहलाते थे।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/ से सही है /हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2
5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. नवपाषाण युग में राजस्थान की सभी बस्तियों के लोग ईंटों के उपयोग के बारे में जानते थे।
   2. चावल की खेती का पहला प्रमाण बेलन घाटी में मिला है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/ से सही है / हैं ?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

उत्तर कुंजी ☑

अभ्यास प्रश्न

1. (a) **2.** (b) **3.** (d) **4.** (b) **5.** (b)

अध्याय

2

सिंधु घाटी सभ्यता

सिंधु घाटी सभ्यता

सिंधु घाटी सभ्यता भारत की कुछ बहुत पुरानी सभ्यताओं में से एक है। इस सभ्यता का समय 3300 ईसा पूर्व से 1300 ईसा पूर्व तक माना जाता है। इसे सिंधु घाटी सभ्यता इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह सभ्यता सिंधु नदी तथा उसकी उप नदियों के आसपास स्थापित थी। इसकी कुछ बस्तियां घग्गर-हाकरा नदी के आसपास भी स्थापित थी।

सिंधु घाटी सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता भी कहा जाता है क्योंकि इस सभ्यता में खुदाई के दौरान मिलने वाला सबसे पहला शहर हड़प्पा था। इस शहर को 1921 में डॉ राज बहादुर दयाराम साहनी और जॉन मार्शल ने खोजा था। लगभग इसी समय, आर. डी. बनर्जी ने मोहनजोदड़ो की खोज की थी। जॉन मार्शल की निगरानी में मोहनजोदड़ो की खुदाई बड़े पैमाने पर की गई थी।

इस सभ्यता के लोग मुख्य रूप से कांसे का उपयोग करते थे, इसी कारण इस सभ्यता को कांस्य युग भी कहा गया है।

क्षेत्र

सिंधु घाटी सभ्यता का क्षेत्र प्राचीन मिस्र (Egypt) और मेसोपोटामिया से भी बड़ा था।

यह सभ्यता उत्तर-पश्चिमी भारत से लेकर पूर्व तथा दक्षिण दिशा में फैली हुई थी। यह सभ्यता उत्तर में जम्मू से लेकर दक्षिण में नर्मदा घाटी तक और पश्चिम में मकरान तट से पूर्व में यमुना तक फैली हुई थी।

सिंधु घाटी सभ्यता को 3 चरणों में विभाजित किया गया है:

1. प्रारंभिक चरण 3300 ई.पू. से 2600 ई.पू. तक।
2. विकसित चरण (जब यह सभ्यता विकास के शिखर पर थी) 2600 ई.पूर्व से 1900 ई.पूर्व तक।
3. आखिरी चरण 1900 ई.पूर्व से 1300 ई.पूर्व तक।

अब तक, सिंधु घाटी सभ्यता से संबंधित लगभग 1400 स्थान मिल चुके हैं, परंतु इनमें विकसित चरण से संबंधित स्थान बहुत कम हैं। इन स्थानों में शहर गिने चुने हैं -

1. हड़प्पा, पंजाब, पाकिस्तान
2. मोहनजोदड़ो, सिंध, पाकिस्तान

3. लोथल, धौलावीरा और सुरकोटदा, गुजरात
4. बनावली और राखीगढ़ी, हरियाणा
5. कालीबंगा, राजस्थान

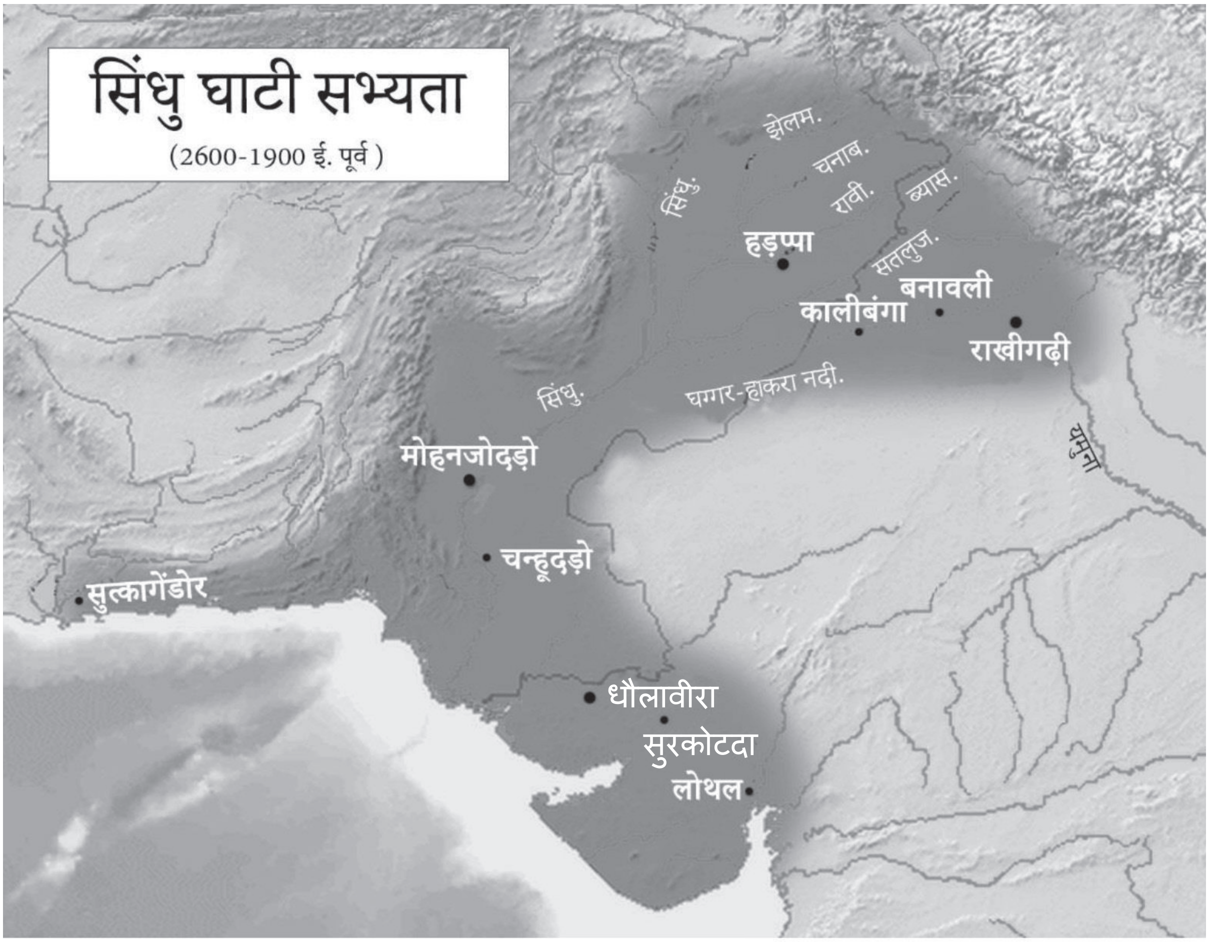

नगर योजना और वास्तु-कला

सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेषों से यह पता चलता है कि इस सभ्यता में नगर योजना और सफाई व्यवस्था बेहद उत्कृष्ट थी। नगर को दो हिस्सों में बाँटा जाता था, दुर्ग (citadel) जो कि एक ऊंचे स्थान पर बनाया जाता था और बाकी नगर का हिस्सा। दुर्ग ईटों के ढेर पर बनाया जाता था और नगर के दूसरे हिस्से से लगभग 12 मीटर ऊंचा होता था। दुर्ग तक पहुँचने के लिए सीढ़ियां होती थीं।

दुर्ग, मोहनजोदड़ो

दुर्ग पर बनी हुई बड़ी-बड़ी इमारतों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि शहर के इस हिस्से का इस्तेमाल धार्मिक कार्यों, उत्सवों, अथवा महत्त्वपूर्ण प्रशासनिक कार्यों के लिए किया जाता रहा होगा। दुर्ग में कुछ छोटी इमारतें भी होती थीं; अनुमानतः यह घर रहे होंगे, परंतु दुर्ग में ऐसी इमारतें आम नहीं थी।

शहर के निचले हिस्से में आम लोगों के घर ग्रिड (grid) प्रणाली के अनुसार बने हुए थे। यहाँ की सड़कें उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम दिशा में बनी हुई थीं और एक दूसरे को समकोण (90°) पर काटती थीं। शहर की व्यवस्था बहुत ही उच्च दर्जे की थी। हर घर में आंगन और स्नान घर था। स्नान घर की नालियां गली की नालियों से जुड़ी हुई थीं। यह नालियां ढकी हुई होती थीं। सफाई पर जितना ध्यान सिंधु घाटी सभ्यता ने दिया शायद ही किसी और प्राचीन सभ्यता ने दिया हो।

नगर योजना

सिंधु घाटी सभ्यता में पत्थरों से बने हुए मकान नहीं थे। इस सभ्यता के मकान पक्की ईंटों से बने हुए थे। कच्ची ईटों का इस्तेमाल केवल उस जगह पर किया जाता था, जहां पर पानी से होने वाले नुकसान की संभावना नहीं होती थी। निर्माण कार्य के लिए एक ही आकार की ईंटों का इस्तेमाल किया जाता था। बड़ी इमारतों की सीढ़ियां पक्की ईंटों से बनाई जाती थीं और इमारतों की छतें समतल होती थीं।

इस सभ्यता की महत्त्वपूर्ण इमारतों में मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानघर और हड़प्पा का अन्न भंडार शामिल हैं।

विशाल स्नानघर

विशाल स्नानघर एक बड़ा तलाब है, जिसमें लोग स्नान करते थे। यह तालाब 11.88 मीटर लंबा, 7.01 मीटर चौड़ा और 2.43 मीटर गहरा है। दो सीढ़ियां तालाब में उतरती हैं, एक उत्तर दिशा से और एक दक्षिण दिशा से।

इस तालाब का फर्श जलरोधी है क्योंकि फर्श में ईटों के जोड़ पर जिप्सम से पलस्तर किया गया है। इसके अतिरिक्त तालाब के कोनों में और संभवत: फर्श में भी कोयले से बने तार के मोटे लेप का प्रयोग किया गया है। दो बड़े दरवाजे विशाल स्नानघर में खुलते हैं। कई कमरे तालाब की पूर्व दिशा में बने हुए हैं। इनमें से एक कमरे में कुआँ बना हुआ है। मुमकिन है कि इस कुएँ के पानी से तालाब को भरा जाता होगा। इसके अतिरिक्त यह तालाब बारिश के पानी से भरता होगा। इस तालाब में किसी नाली से पानी नहीं आता था।

विद्वान मानते हैं कि यह तालाब धार्मिक रीति-रिवाजों के लिए उपयोग किया जाता होगा। शायद यहाँ के पानी का उपयोग मनुष्य की शुद्धिकरण के लिए किया जाता होगा।

विशाल स्नानघर, मोहनजोदड़ो

अन्नागार

हड़प्पा में एक विशाल अन्नागार के अवशेष मिले हैं। अन्नागार की लंबाई और चौड़ाई दोनों ही लगभग 45 मीटर से अधिक है।

मुख्य गलियारा लगभग 7 मीटर चौड़ा है। गलियारे के बाएं तरफ 6 कमरे और दाएँ तरफ भी 6 कमरे बने हुए थे। प्रत्येक कमरे का माप 15.2 x 6.1 मीटर है। यह कमरे संभवतः अन्नागार में काम करने वाले मजदूरों के लिए थे। इन कमरों के ऊपर लकड़ी का ढाँचा बना था, जिसे विशाल स्तंभों पर टिकाया हुआ था। ऊपर जाने के लिए मुख्य गलियारे से सीढ़ियां निकलती थीं।

अन्नागार में न तो अनाज का कोई दाना प्राप्त हुआ है और न ही अनाज को रखने के लिए कोई बर्तन मिले हैं। अन्नागार के रूप में इसकी पहचान मुख्यत: रोम में पाए गए ऐसे ही ढाँचों के आधार पर की गई है।

अन्नागार, हड़प्पा

कृषि

सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। इतने बड़े अन्नागार का मिलना इस बात का प्रमाण है। अधिकतर कृषि सर्दियों में की जाती थी। सिंधु घाटी के लोग गेहूं, जौ, राई, मटर, तिल, सरसों, चावल और कपास की खेती करते थे। कपास की खेती सबसे पहले सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों ने ही प्रारंभ की। यूनानी लोग कपास को सिनडान (Sindon) कहते थे क्योंकि सबसे पहले सिंध में ही इसकी खेती हुई थी ।

इस सभ्यता में सबसे बड़े पैमाने पर गेहूं और जौ की खेती होती थी। गेहूं और जौ की खेती के प्रमाण मोहनजोदड़ो में मिले हैं। प्राचीन काल में सिंधु घाटी सभ्यता प्राकृतिक वनस्पति से भरी हुई थी। नहर सिंचाई का कोई प्रमाण नहीं मिला है। यह सभ्यता लोहे के उपयोग के बारे में नहीं जानती थी, इसलिए इस सभ्यता के लोग शायद लकड़ी के हल का उपयोग करते थे।

घर सड़क से थोड़े ऊंचे स्तर पर बनाए जाते थे ताकि बाढ़ का पानी घरों में ना घुस सके। बाढ़ के कारण गर्मियों में कृषि में बहुत बाधा आती थी।

पालतू जानवर

भले ही सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि था, परंतु वे पालतू जानवर आम तौर पर रखते थे। कुत्तों, बिल्लियों, बैलों, भैंसों, बकरियों, भेड़ों, हाथियों, और सूअरों को पाला जाता था। सांड सबसे पसंदीदा पालतू जानवर था। ऊंटों और गधों का इस्तेमाल सामान ढोने के लिए किया जाता था।

शुरू की खुदाइयों से यह अंदाजा लगाया जाता रहा है कि सिंधु घाटी सभ्यता के लोग घोड़ों को नहीं पालते थे। परंतु बाद में चलकर सभ्यता के कुछ हिस्सों में घोड़ों के अवशेष भी मिले हैं। शायद सभ्यता के आखिरी चरण में पालतू घोड़े रखे जाने लगे थे। पालतू जानवरों के अलावा कई जंगली जानवरों जैसे गेंडे, चीते और जंगली भैंसे के अवशेष भी बरामद हुए हैं।

व्यापार

सिंधु घाटी सभ्यता का समाज एक व्यापारिक समाज था। यहां के लोग मुद्रा का नहीं, बल्कि वस्तु विनिमय प्रणाली के आधार पर व्यापार करते थे। व्यापारियों की अपनी मोहरें (seals) होती थीं। यहां के लोग समान लिपि का प्रयोग करते थे। वजन और माप के स्तर भी निश्चित थे।

खुदाई से कुछ ऐसी चीजें प्राप्त हुई हैं, जिनसे पता चलता है कि व्यापार भारतीय महाद्वीप के बाहर भी किया जाता था। मेसोपोटामिया और तुर्की के साथ व्यापार के प्रमाण मिले हैं। मेसोपोटामिया अभिलेखों में सिंधु क्षेत्र को मेलुहा कहा गया है। सिंधु घाटी सभ्यता के व्यापारियों के पास कच्चे माल की कमी थी। परिणामस्वरूप, कच्चा माल अन्य देशों से आयात किया जाता था।

निर्यात में कृषि संबंधित वस्तुएं और कई कारखानों से बनी वस्तुएं जैसे कि कपास से बना समान, मिट्टी के बर्तन, कार्नेलियन के मोती आदि प्रमुख थे ।

वजन प्रणाली

खुदाई में चकमक पत्थर से बने कई संतुलन-तौल (balance weights) मिले हैं। ये तौल घन के आकार में हैं। सबसे सामान्य तौल का वज़न लगभग 13.65 ग्राम था। अन्य तौल इस वजन के उप-विभाजन या गुणक थे। संतुलन-तौल क्रम में आगे बढ़ते थे। पहले तौल दोहरीकरण क्रम में बढ़ते थे, जैसे कि 1, 2, 4, 8 से 64 तक और बाद के तौल 16 के 10, 100, 1000 आदि गुणित में थे। सामान्य संतुलन-तौल का संबंध अन्य तौल के साथ आगे वर्णित है।

सबसे छोटी इकाई के गुणक	1	2	4	8	16		32	64		
सामान्य संतुलन-तौल (13.65 ग्राम) के गुणक	1/16	1/8	¼	½	1		2	4		
आज की तुलना में तौल	0.85 g	1.75 g	3.45 g	6.85 g	13.65 g		27.35 g	54.65 g		
10 से गुणा करके					160	200	320	640		
					10	12.5	20	40		
					136.5 g	170.66	273.5 g	546.5 g		
100 से गुणा करके					1600		3200	6400	8000	12,800
					100		200	400	500	800
					1.365 kg		2.7 3kg	5.46 kg	6.83 kg	10.92 kg

माप प्रणाली

सिंधु घाटी के लोग माप प्रणाली का भी इस्तेमाल करते थे । एक फुट 13.2 इंच के बराबर माना जाता था और क्यूबिट (cubit) 18 इंच या 44 सेंटीमीटर के बराबर माना जाता था। क्यूबिट अर्थात् बाजू की लंबाई- कोहनी से बीच वाली उंगली के सिरे तक।

धार्मिक परंपराएं

विशाल स्नानागार (मोहनजोदड़ो में) और अग्नि बेदी (कालीबंगा और लोथल में) के अतिरिक्त सिंधु घाटी सभ्यता में कोई मंदिर अथवा धर्म से जुड़ी हुई संरचना प्राप्त नहीं हुई है। खुदाई से मिली कुछ चीजों से यह परिणाम निकलता है कि सिंधु घाटी के लोगों की धार्मिक प्रथाएं वास्तविक हिंदू धर्म की प्रथाओं से काफी मिलती थीं, जैसे कि देवी मां, पशुपति शिवा, जानवरों और पेड़ों आदि का पूजन ।

हड़प्पा की खुदाई में टेराकोटा (पकाई हुई मिट्टी) से बनी हुई देवी मां की एक मूर्ति मिली है। इस मूर्ति के गर्भ से पौधा पैदा होता दिखाया गया है। यह मूर्ति धरती मां की प्रतीक है।

टेराकोटा से बनी हुई धरती मां की एक मूर्ति

एक मुहर (seal) पर पुरुष देवता की आकृति मिली है। इस मुहर को पशुपति मुहर कहा जाता है। पुरुष देवता के दो सींग हैं और वह एक योगी की भांति चौकड़ी मार कर बैठा हुआ है। पुरुष देवता 4 जानवरों से घिरा हुआ है। यह जानवर हाथी, बाघ, गेंडा और भैंस हैं। पुरुष देवता के चरणों के नीचे दो हिरण दिखाई पड़ते हैं। यह पुरुष देवता वर्तमान काल के हिंदू धर्म के भगवान शिव जैसा दिखाई देता है।

पशुपति मुहर

इसके अलावा हड़प्पा सभ्यता में लिंग की भी पूजा होती थी। लिंग के आकार के बहुत सारे पत्थर मिले हैं, जिनसे पता चलता है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग लिंग की पूजा करते थे। लिंग भगवान शिव का प्रतीक है।

सिंधु घाटी सभ्यता में पेड़ों और जानवरों की पूजा का प्रमाण भी मिला है। एक मुहर में देवता का चित्र पीपल के पेड़ के बीच में दिखाया गया है। पीपल के पेड़ की आज भी पूजा होती है। जानवरों की भी पूजा होती थी। सबसे पूजनीय जानवर कूबड़ वाला सांड था।

मृत शरीर को दफन करने की प्रथा

विभिन्न जगहों पर मिले कब्रिस्तान यह प्रमाणित करते हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता में मुर्दों को दफ़नाने की अलग-अलग प्रथाएं थीं। उदाहरण के तौर पर मोहनजोदड़ो में तीन तरह की प्रथाएँ मिली हैं:

1. पूर्ण दफन (पूरे शरीर को कब्र में वस्तुओ के साथ दफनाया जाता था)।
2. आंशिक दफन (मुर्दा शरीर को पहले जानवरों के सामने फेंक दिया जाता था और फिर बची हुई हड्डियों को दफना दिया जाता था)।
3. कई स्थानों पर अंतिम संस्कार के बाद दफन किया जाता था।

   लोथल में दफनाने की अलग प्रथा का प्रमाण मिला है। यहाँ पर एक ही कब्र में पुरुष और स्त्री को साथ दफनाया जाता था। शरीर को उत्तर से दक्षिण दिशा में डाला जाता था, सिर की दिशा उत्तर में रखी जाती थी।

प्रौद्योगिकी

सिंधु घाटी सभ्यता कांस्य का उपयोग करने वाली सभ्यता थी। पत्थर के औजारों के उपयोग के अतिरिक्त, लोग कांस्य के औजारों का उपयोग करना भी जानते थे।

उस समय सोने की वस्तुएं आम थीं। सोना एक प्रतिक्रियाशील धातु नहीं है। इस प्रकार, यह स्वाभाविक रूप से उपलब्ध था। चांदी का उपयोग सिंधु घाटी सभ्यता में पहली बार हुआ था और इसका प्रयोग सोने से अधिक प्रचलित था। सोने और चांदी के इलावा आर्सेनिक (arsenic), सीसा (lead), सुरमा (antimony), और गिल्ट (Nickel) आदि धातुओं का भी प्रयोग किया जाता था। पीतल से बने हुए औजार बहुत ही भारी मात्रा में मिले हैं। यहां के लोग नाव बनाना भी जानते थे।

मुहरें और टेराकोटा

सिंधु घाटी सभ्यता में 2,000 से ज्यादा मुहरें (seals) मिली हैं। यह मुहरें छोटे आकार की थीं। अधिकतर मुहरें चौरस होती थीं, परंतु कई मुहरें आयत और गोल आकार की भी होती थीं। मुख्य रूप से दो तरह की मुहरें मिली हैं: पहली, चौरस, जिसमें चित्र और शिलालेख दोनों है; दूसरी, आयत, जिसमें केवल शिलालेख है।

मुहरें बनाने के लिए शैलखटी (Steatite) का सबसे अधिक इस्तेमाल होता था। इसके इलावा सुलेमानी पत्थर (agate), शीस्ट (chert), तांबे और मिट्टी का भी उपयोग होता था। सोने, चांदी और हाथी दांत से बनी मुहरें भी प्राप्त हुई हैं।

मुहरों पर चित्रलिपि की होती थी। चित्रलिपि बाएं से दाएं तरफ की जाती थी। परंतु कई मुहरों पर दाएं से बाएं तरफ चित्रलिपि भी मिली है। मुहरों का अधिक उपयोग व्यापार के लिए होता था, परंतु संभावना है कि मुहर ताबीज के रूप में या फिर पढ़ाई के उद्देश्य से भी इस्तेमाल होती थी।

मोहनजोदड़ो में पाई गई एक नग्न पुरुष देवता की चौकोर मुहर

आयाम: 2.65 x 2.7 से. मी., 0.83 से 0.86 से. मी. मोटाई

टेराकोटा से बनी मूर्तियां भी कई स्थानों से प्राप्त हुई है। मिट्टी को आग में पकाकर जो मूर्तियां तैयार की जाती थीं, उन्हें टेराकोटा कहा जाता है। यह मूर्तियां खिलौनों की तरह अथवा पूजने के लिए उपयोग की जाती थी।

राज्यव्यवस्था और समाज

सिंधु घाटी सभ्यता की राज्यव्यवस्था के बारे में कोई स्पष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है। किसी केंद्रीय सत्ता का प्रमाण नहीं मिला है। युद्ध की अनुपस्थिति शांत प्रशासन के बारे में दर्शाती है।

मूर्तिकला

दो प्रमुख मूर्तियां सिंधु घाटी की खुदाई से प्राप्त हुई हैं:

1. पुजारी की प्रतिमा जोकि चूना-पत्थर से बनी हुई है।
2. नृत्य करती लड़की की प्रतिमा जो कि कांसे की बनी हुई है।

यह मूर्ति सिंधु घाटी सभ्यता के कारीगरों की निपुणता दर्शाती है।

मोहनजोदड़ो में मिली पुजारी-राजा की प्रतिमा

पुजारी राजा के माथे पर आभूषण आँख का प्रतिनिधित्व है। यह आभूषण सोने का बना हुआ था, जो बीच में शैलखटी से भरा हुआ था।

मोहनजोदड़ो में मिली नृत्य करती लड़की की कांस्य प्रतिमा

इन मूर्तियों के अतिरिक्त लाल मिट्टी के पत्थर से बनाया हुआ पुरुष का धड़ मिला है ।

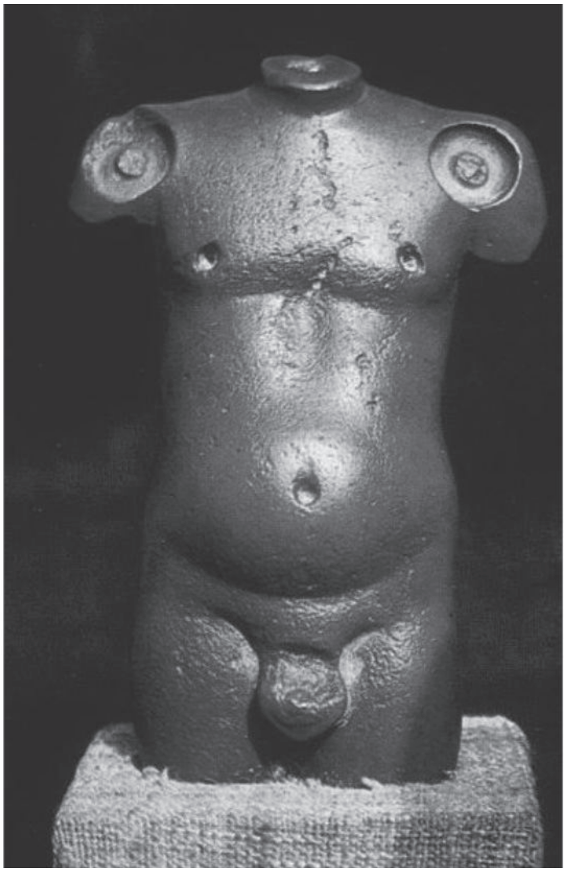

हड़प्पा में मिला पुरुष का धड़

मिट्टी के बर्तन

सिंधु घाटी के लोग उच्च दर्जे के कुम्हार थे। यहां के लोगों द्वारा बनाए गए बर्तनों को चार भागों में बांटा जा सकता है-

1. सादे बर्तन
2. लाल और काले रंग के बर्तन
3. बहुरंगी बर्तन (यह बर्तन आम नहीं होते थे)
4. छेद वाले बर्तन

अलग-अलग तरह के बर्तनों के अलग-अलग उपयोग होते थे:

1. सादे बर्तन घरों में उपयोग होते थे, जैसे कि अनाज और पानी संग्रहण के लिए।
2. छोटे बर्तन सजावट के लिए उपयोग किए जाते थे।
3. छेद वाले बर्तन शायद मदिरा डालने के काम में आते थे।

पोशाक शैली

सिंधु घाटी के लोग कपास और ऊन के कपड़े पहनते थे। आदमी गाउन पहनते थे जो कि केवल एक ही कंधा ढकते थे। औरतें घागरा पहनती थीं जोकि घुटनों तक लंबा होता था। यह घागरा मोतियों से बने कमरबंद से बांधा जाता था। अमीर लोग शानदार बनावट के कपड़े पहनते थे।

केश शैली

सिंधु घाटी सभ्यता के लोगों का बाल बनाने का अंदाज शानदार था। औरतों में चोटी बनाना काफी प्रचलित था। आदमी और औरत, दोनों ही लंबे बाल रखते थे। आदमी मूछें और दाढ़ी भी रखते थे।

भूषाचार

तांबे में जड़े हुए शीशे प्रचलन में थे। मोहनजोदड़ो में औरतों द्वारा चेहरे को सजाने वाले रंग, काजल तथा अन्य श्रृंगार सामग्री का प्रमाण मिला है। चन्हूदड़ो में लिपस्टिक का प्रमाण भी मिला है। आदमी कांस्य के उस्तुरे इस्तेमाल करते थे।

आभूषण

सिंधु घाटी के लोगों को आभूषण बहुत प्रिय थे। पुरुष तथा स्त्री दोनों ही आभूषण पहनते थे। जैसे कि गले की माला, जूड़ा बनाने का फ़ीता, अंगूठियां और बाजूबंद। कमरबंद, कान के झुमके तथा पायल केवल औरतें पहनती थी। लोथल और चन्हूदड़ो के कारखानों में मोती बड़े पैमाने पर बनाए जाते थे। बहुत-सारे ताबीज भी मिले हैं। शायद सिंधु घाटी के लोग भूतों और बुरी ताकतों में विश्वास रखते थे।

हड़प्पा के लोगों के आभूषण

मनोरंजन

बच्चे पक्की मिट्टी के खिलौनों से और कंचों से खेलते थे। गाना, बजाना और नाचना लोकप्रिय था। शिकार करना और मछली पकड़ना आम था। कुछ मुहरों पर जंगली गैंडे और हिरण का शिकार दिखाया गया है। पासा भी खेला जाता था।

सिंधु घाटी की लिपि

हड़प्पा लिपि (जिसे सिंधु लिपि भी कहा जाता है) को अभी तक नहीं समझा जा सका है। इसके अक्षर चित्रमय हैं और सार्थक संकेतों के रूप में प्रतीत होते हैं। प्रमुख संकेतों की संख्या लगभग 400 है।

अभिलेख ज्यादातर दाएं से बाएं लिखे जाते थे। यह इस तथ्य से साबित हुआ है कि प्रतीकों को कई बार बाईं ओर संकुचित पाया गया है। आमतौर पर ऐसा तब होता है जब पंक्ति के अंत में लेखक के पास जगह कम होती है।

इन अभिलेखों में बहुत ही थोड़े संकेत हैं, जिससे यह तय करना मुश्किल हो जाता है कि इन संकेतों ने एक लिपि गठित की है अथवा यह लेखन प्रणाली का एक प्रतीक है भी या नहीं ? शिलालेखों की औसत लंबाई पांच संकेतों से कम है, सबसे लंबे शिलालेख में 26 संकेत हैं। लिपि को समझने में मदद करने के लिए कोई ज्ञात द्विभाषी शिलालेख नहीं है, और न ही लिपि समय के साथ किसी भी महत्त्वपूर्ण बदलाव को दिखाती है। कई प्रयासों के बावजूद, 'लिपि' को अभी तक नहीं समझा जा सका है, लेकिन प्रयास अभी भी जारी है।

मुहर पर लिपि

सिंधु घाटी सभ्यता का पतन

सिंधु घाटी सभ्यता अचानक से खत्म हो गई। इस सभ्यता के अचानक खत्म होने का वास्तविक कारण पता नहीं है। फिर भी इसके पतन के कई कारणों की परिकल्पना की जाती है:

1. यह सभ्यता शायद बाढ़ के कारण खत्म हो गई। पहले सभ्यता नदी के किनारे बस्ती थी। इसलिए यह संभव है कि इस सभ्यता का पतन बाढ़ के कारण हुआ।
2. सिंधु घाटी क्षेत्र में भूकंप की भी काफी संभावना थी इसलिए हो सकता है कि बार-बार भूकंप आने से यह सभ्यता समाप्त हो गई हो।

3. सिंधु घाटी सभ्यता के लोग व्यापारी थे, योद्धा नहीं। शायद बाहर के लोगों के आक्रमण से यह सभ्यता खत्म हो गई हो।
   मोहनजोदड़ो में कई बिना दाह संस्कार के मनुष्य के पिंजर प्राप्त हुए हैं। ये पिंजर बड़ा आक्रमण दर्शाते हैं। शायद यह आक्रमण आर्यों द्वारा किया गया था।
4. ऊपर लिखित कारणों के अतिरिक्त अन्य कारण जैसे कि सूखा या बीमारी फैलना भी इस सभ्यता के अचानक खत्म होने के कारण हो सकते हैं।

हड़प्पा सभ्यता और अन्य पश्चिमी एशियाई सभ्यताओं में अंतर

हड़प्पा सभ्यता	मेसोपोटामियन सभ्यता
शहरों का नियोजन बड़े अच्छे तरीके से किया गया था।	शहरों का नियोजन बेतरतीबी से किया गया था।
जल निकास प्रणाली बहुत अच्छी थी।	सफ़ाई व्यवस्था पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया।
ईंटों से बने हुए आयताकार घर थे और हर घर में स्नानघर था।	घरों का कोई विशेष आकार नहीं था।
इस सभ्यता की अपनी कोई विशेष भाषा नहीं थी।	इस सभ्यता की अपनी विशेष भाषा थी ।

सिंधु घाटी सभ्यता के महत्त्वपूर्ण स्थानों की सूची

स्थान	जिला	राज्य	देश	खुदाइयां/खोजें
बनावली	फतेहाबाद	हरियाणा	भारत	• जौ के प्रमाण मिले हैं • टेराकोटा पर हल का चित्र बनाया हुआ मिला है। • सभ्यता के दो चरण (पूर्व हड़प्पा और हड़प्पा) के प्रमाण मिलते हैं।
चन्हूदड़ो	नवाबशाह	सिंध	पाकिस्तान	• मोती बनाने का कारखाना और लिपस्टिक के उपयोग का प्रमाण मिला है। • केवल इस शहर में दुर्ग नहीं मिला है।
धौलावीरा	कच्छ	गुजरात	भारत	• एक चित्र मिला है, इस चित्र में एक नग्न व्यक्ति रथ चला रहा है और इस रथ से दो बैल जुड़े हुए हैं। • जल संचयन और बहुत सारे जलाशय का प्रमाण मिला है। • निर्माण कार्यों में चट्टानों का इस्तेमाल का प्रमाण मिला है। • सिंधु घाटी सभ्यता के तीनों चरण का प्रमाण मिला है।

हड़प्पा	जिला साहिवाल	पंजाब	पाकिस्तान	• अन्नागार और बहुत सारी कलाकृतियां पाई गई हैं। • शव पेटी में दफन करने का प्रमाण मिला है। • इस स्थान की खुदाई सबसे पहले हुई थी।
कालीबंगा	जिला हनुमानगढ़	राजस्थान	भारत	• पकी/जली हुई चूड़ियां, अग्नि वेदियां और शिवलिंग का प्रमाण मिला है। • छोटे गोल गड्ढे मिले हैं जिनमें कलश और अन्य मिट्टी के बर्तन भरे हुए थे। • ऊंट की हड्डियां मिली है।
लोथल	जिला अहमदाबाद	गुजरात	भारत	• मोती बनाने का कारखाना, गोदीबाड़ा (dockyard), मोहरें, अग्नि वेदियां, रंग किए हुए बर्तन और चावल की खेती के प्रमाण मिले हैं।
मेहरगढ़		बलूचिस्तान	पाकिस्तान	• सबसे पुराने कृषि समुदाय के प्रमाण मिले हैं।
मोहनजोदड़ो		सिंध	पाकिस्तान	• विशाल स्नानघर, विशाल अन्नागार, नाचती हुई लड़की की कांस्य की मूर्ति, दाढ़ी वाले पुजारी-राजा की मूर्ति, टेराकोटा (पक्की हुई मिट्टी) के खिलोने, पशुपति मोहर, मेसोपोटामिया में पाई जाने वाली मुहरें और बुने हुए कपड़े का एक टुकड़ा मिला है। • मोहनजोदड़ो सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा शहर था। यह शहर 500 हेक्टेयर में फैला हुआ था।
सुरकोटदा	जिला कच्छ	गुजरात	भारत	• घोड़े की हड्डियां केवल यही पर मिली हैं।
सुत्कांगेंडोर		बलूचिस्तान	पाकिस्तान	• सुरकोटदा की तरह, यह शहर भी तट पर है।
राखीगढ़ी	जिला हिसार	हरियाणा	भारत	• हड़प्पा सभ्यता के तीनों चरण के प्रमाण मिलते हैं। • सिंधु घाटी सभ्यता का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। यह शहर 250 हेक्टेयर में फैला हुआ था।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन-सा जानवर हड़प्पा सभ्यता की मुहरों और टेराकोटा की कला में **नहीं** मिलता?
   (a) गाय
   (b) हाथी
   (c) हिरण
   (d) चीता
2. चांदी के उपयोग का सबसे पहला प्रमाण कहां मिला है?
   (a) हड़प्पा सभ्यता
   (b) पुरापाषाण युग
   (c) वैदिक सभ्यता
   (d) उपरोक्त में से कोई नहीं
3. सिंधु घाटी या हड़प्पा सभ्यता कौन-सी सभ्यता है?
   (a) नवपाषाण सभ्यता
   (b) पुरापाषाण सभ्यता
   (c) ताम्रपाषाण सभ्यता
   (d) उत्तर ताम्रपाषाण युग
4. निम्नलिखित में से किस पुरातत्वविद (archaeologist) ने मोहनजोदड़ो की खोज की?
   (a) सुजोहू मार्शल
   (b) दया राम साहनी
   (c) राखल दास बैनर्जी
   (d) सर मर्टीमर व्हीलर
5. निम्नलिखित स्थानों में से कौन-सा स्थान सिंधु घाटी सभ्यता के दो चरण (पूर्व हड़प्पा और हड़प्पा) का प्रमाण देता है?
   (a) लोथल
   (b) मोहनजोदड़ो
   (c) बनावली
   (d) चन्हूदड़ो

पिछली प्रारंभिक परीक्षा

1. सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिएः **(2011)**
   1. यह प्रमुखतः लौकिक सभ्यता थी तथा उसमें धार्मिक तत्व, यद्यपि उपस्थित था, वर्चस्वशाली नहीं था।
   2. उस काल में भारत में कपास से वस्त्र बनाए जाते थे।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1 और न ही 2

2. निम्नलिखित में से कौन-सा/से लक्षण सिन्धु सभ्यता के लोगों का सही चित्रण करता है/करते हैं? **(2013)**
   1. उनके विशाल महल और मन्दिर होते थे।
   2. यह देवियों और देवताओं, दोनों की पूजा करते थे।
   3. यह युद्ध में घोड़ों द्वारा खींचे गए रथों का प्रयोग करते थे।

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही कथन/कथनों को चुनिए।

   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 2
   (c) 1, 2 और 3
   (d) उपर्युक्त कथनों में से कोई भी सही नहीं है

3. ऋग्वेद कालीन आर्यों और सिन्धु घाटी के लोगों की संस्कृति के बीच अंतर के संबंध में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं? **(2017)**
   1. ऋग्वेद-कालीन आर्य कवच और शिरस्त्राण (हेलमेट) का उपयोग करते थे जबकि सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों में इनके उपयोग का कोई साक्ष्य नहीं मिलता।
   2. ऋग्वेद-कालीन आर्यों को स्वर्ण, चाँदी और ताम्र का ज्ञान था जबकि सिंधु घाटी के लोगों को केवल ताम्र और लोह का ज्ञान था।
   3. ऋग्वेद-कालीन आर्यों ने घोड़े को पालतू बना लिया था जबकि इस बात का कोई साक्ष्य नहीं है कि सिन्धु घाटी के लोग इस पशु को जाते थे।

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3

उत्तर कुंजी ☑

अभ्यास प्रश्न

1. (a) **2.** (a) **3.** (c) **4.** (c) **5.** (d)

पिछली प्रारंभिक परीक्षा

1. (c) **2.** (b) 3. (a)

इकाई 2

भारत का मध्यकालीन इतिहास

इकाई 3

भारतीय संस्कृति

अभ्यास प्रश्नों तथा पिछली प्रारंभिक परीक्षा में पूछे गए प्रश्नों के समाधान

इकाई 1: भारत का प्राचीन इतिहास

अध्याय 1 पूर्व ऐतिहासिक युग

अभ्यास प्रश्न

4. (b) कथन 1 गलत है: मध्यपाषाण काल में लोगों ने छोटे आकार के पत्थर के औजारों का इस्तेमाल किया, जो लगभग 0.5-1 इंच लंबे थे।

5. (b) कथन 1 गलत है: गिलूण्ड के लोग (वर्तमान राजस्थान के राजसमन्द जिले का एक गांव) ईंटों से परिचित नहीं थे।

अध्याय 2 सिंधु घाटी सभ्यता

अभ्यास प्रश्न

4. (c) आर. डी. बनर्जी एक भारतीय इतिहासकार और पुरातत्व विद्या के अग्रणी थे। उन्हें मोहनजोदड़ो की खुदाई के लिए जाना जाता है। उन्होंने हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के बीच की समानताओं को भी उजागर किया था।

5. (d) कालीबंगा (अर्थात काली चूड़ीयां), उत्तरी राजस्थान तथा बनावली, हरियाणा के हिसार जिले में स्थित इन दोनों स्थानों से पूर्व हड़प्पा और हड़प्पा, दो सांस्कृतिक चरणों का प्रमाण मिलता है।

पिछली प्रारंभिक परीक्षा

1. (c) कथन 1 सही है, क्योंकि इस सभ्यता का धर्म संबंधी एकमात्र सबूत "महान स्नान घर" है। हालांकि, कुछ देवी-देवताओं की मूर्तियां भी मिली है, लेकिन उनसे यह साबित नहीं होता कि सिंधु घाटी सभ्यता पर धर्म हावी था।

2. (b) कथन 1 गलत है, क्योंकि हड़प्पा से किसी भी तरह के महल तथा मंदिर नहीं मिलें है।

कथन 3 गलत है, क्योंकि घोड़ों के उपयोग के कुछ प्रमाण मिले हैं; लेकिन, रथ के प्रयोग का कोई भी प्रमाण नहीं मिला है।

3. (a) कथन 2 गलत है, क्योंकि हड़प्पा पुरुष और महिलाएं सोने, चांदी, तांबे, कांस्य और क़ीमती पत्थरों से बने गहने पहनते थे। इसलिए, सिंधु घाटी के लोगों को तांबे, कांस्य, चांदी, सोने, के इस्तेमाल का पता था, लेकिन वे लोहे के प्रयोग के बारे में नहीं जानते थे। लोहे की खोज तो काफी बाद में, लगभग 1000 ई.पू. में हुई थी।

कथन 3 गलत है, क्योंकि सिंधु घाटी सभ्यता में घोड़ों के साक्ष्य मिले थे।

अध्याय 3 पूर्व वैदिक काल

अभ्यास प्रश्न

2. (b) कथन 1 गलत है, क्योंकि प्रारंभिक वैदिक समाज मुख्य रूप से पशुचारक था। कृषि उनका दूसरा व्यवसाय था।

6. (a) कथन 2 गलत है, क्योंकि महिलाएं यज्ञ सहित कई अन्य धार्मिक समारोहों में भी भाग लेती थीं।

अध्याय 4 उत्तर वैदिक काल

अभ्यास प्रश्न

2. (c) विकल्प (a) गलत है: वसुधैव कुटुंबकम महा उपनिषद में पाया गया है, जिसका अर्थ है "दुनिया एक परिवार है।"

विकल्प (b) गलत है: योगक्षेमं वहाम्यहम् भगवत गीता में पाया गया है।

मुख्य परीक्षा में उत्तर लिखने की रणनीति

एक अच्छा उत्तर निम्नलिखित पहलुओं पर आधारित है।

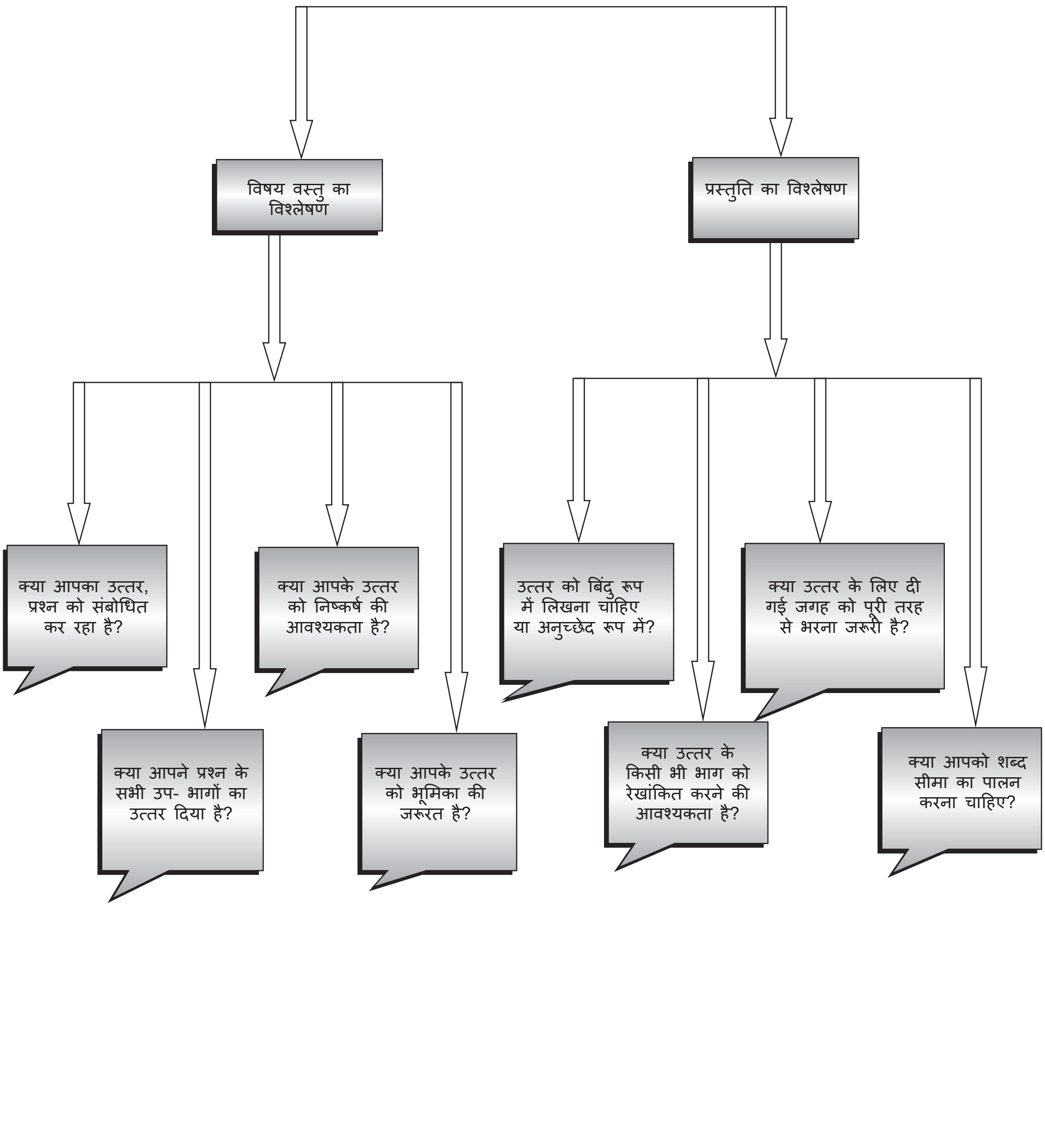

पिछले वर्षों के प्रश्न (मुख्य परीक्षा) समाधान के साथ

1. दक्षिण भारत के राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से अधिक उपयोगी न होते हुए भी संगम साहित्य उस समय की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का अत्यंत प्रभावी शैली में वर्णन करता है। टिप्पणी कीजिए। **(2013)**

उत्तर:

प्रश्न का विश्लेषण	
टिप्पणी कीजिए	एक राय या प्रतिक्रिया व्यक्त करें
उप-भागों की संख्या	दो भाग 1: दक्षिण भारत के राजनीतिक इतिहास की दृष्टि से संगम साहित्य बहुत उपयोगी नहीं है। भाग II: संगम साहित्य उस समय की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का अत्यंत प्रभावी शैली में वर्णन करता है।
लिखने की विधि	बिंदु और अनुच्छेद रूप का मिश्रण
निष्कर्ष का महत्व	आवश्यक नहीं है

तीसरी शताब्दी ई.पू. और तीसरी शताब्दी ईसवी के बीच के समय में तीन संगम आयोजित किए गए थे। पहले दो संगमों की रचनाएं पूरी तरह से नष्ट हो गई थीं। लेकिन अंतिम संगम में संकलित किया गया साहित्य बच गया और इसने दक्षिण भारत की राजनीति, समाज और अर्थव्यवस्था को जानने में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संगम साहित्य निम्नलिखित कारणों से संबंधित राजनीतिक इतिहास के दृष्टिकोण से बहुत उपयोगी नहीं है:

- राजनीति पर संगम के विवरण विश्वसनीय नहीं हैं, क्योंकि लेखकों को सत्तारूढ़ वर्ग द्वारा संरक्षित किया गया था। इसलिए, ये विवरण अतिरंजित और त्रुटिपूर्ण हो सकते हैं।
- साहित्य के कुछ पहलुओं को सत्यापित करने के लिए पुरातात्विक स्रोत अनुपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए, साहित्य में वर्णित बस्तियों के लिए कोई पुरातात्विक स्रोत उपलब्ध नहीं हैं।
- संगम साहित्य एक विशेष काल से संबंधित है। इसलिए, संगम साहित्य में पहले और बाद के कालों का राजनीतिक इतिहास उपलब्ध नहीं है।

समाज और अर्थव्यवस्था के बारे में जानकारी

संगम साहित्य में अपने समय की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों का उल्लेखनीय विवरण दिया गया है, क्योंकि लेखन के लोकप्रिय विषय प्रेम और वीरता थे। ऐसे विषयों को सामाजिक और आर्थिक जीवन के बड़े संदर्भ में शामिल किया गया है। लेखन में सामाजिक संरचना, धर्म, व्यवसाय, मानदंड, कर्मकांड, जीवन स्तर आदि के बारे में जानकारी दी गई है।

2. आरंभिक भारतीय शिलालेखों में अंकित 'ताण्डव' नृत्य की विवेचना कीजिए। **(2013)**

उत्तर:

प्रश्न का विश्लेषण	
विवेचना कीजिए	विषय के विभिन्न मुद्दों या विचारों को ध्यान में रखते हुए, विस्तार से लिखें।
उपभागों की संख्या	एक भाग
लिखने की विधि	अनुच्छेद रूप
निष्कर्ष का महत्व	आवश्यक नहीं है

भगवान शिव द्वारा प्रस्तुत नृत्य को तांडव के रूप में जाना जाता है। तांडव ब्रह्मांड के विनाशक के रूप में शिव की हिंसक प्रकृति को दर्शाता है। तांडव नृत्य की गति तेज और ऊर्जावान होती हैं। तांडव नृत्य, लास्य नृत्य के विपरीत है। लास्य की प्रवृत्ति नरम, सुंदर और कभी-कभी कामुक होती है।

भरतमुनि ने नाट्य शास्त्र में तांडव नृत्य (और लास्य नृत्य) का वर्णन किया है। कुछ विद्वानों का मानना है कि तांडव नृत्य के सात विभिन्न प्रकार हैं। तांडव नृत्य की लोकप्रिय शैलियां आनंद तांडव और रुद्र तांडव हैं। जो तांडव आनन्दित मनोस्थिति में किया जाता है उसे आनंद तांडव कहते हैं तथा जो हिंसक मनोस्थिति में अर्थात गुस्से में किया जाता है उसे रूद्र तांडव कहा जाता है।

3. मंदिर वास्तुकला के विकास में चोल वास्तुकला का उच्च स्थान है। विवेचना कीजिए। **(2013)**

उत्तर:

प्रश्न का विश्लेषण	
विवेचना कीजिए	विषय के विभिन्न मुद्दों या विचारों को ध्यान में रखते हुए, विस्तार से लिखें।
उपभागों की संख्या	एक भाग
लिखने की विधि	बिंदु रूप में
निष्कर्ष का महत्व	आवश्यक नहीं है

भारत का सबसे बड़ा और व्यापक रूप से नक्काशीदार मंदिर,चोल अवधि से संबंधित है। शाही चोलस द्वारा निर्मित दो सबसे महत्वपूर्ण मंदिर थे

- **बृहदेश्वर मंदिर** का निर्माण राजराजा चोल प्रथम द्वारा करवाया गया था और इसका निर्माण 1010 ईस्वी में पूरा हुआ था। इस मंदिर का विमानम् (मंदिर टावर) 198 फुट (60 मीटर) ऊंचा है और दुनिया के सबसे ऊंचे विमानम् में से एक है। इस मंदिर के कुंबम (मंदिर की सबसे ऊँची संरचना) का वजन करीब 80 टन है।
- **गंगईकौण्ड चोलपुरम मंदिर** 1020-1029 ईस्वी के दौरान राजेंद्र चोल द्वारा बनवाया गया था, वह राजराजा चोल का पुत्र और उत्तराधिकारी था। यह मंदिर तंजौर के प्रसिद्ध बृहदेश्वर मंदिर के बगल में स्थित है। गंगईकौण्ड चोलपुरम मंदिर का विमानम् नौ मंजिला हैं, इसकी ऊंचाई 185 फुट है। इस मंदिर में दक्षिण भारत का सबसे बड़ा शिवलिंग है।

4. सिंधु घाटी सभ्यता की नगरीय आयोजना और संस्कृति ने किस सीमा तक वर्तमान युगीन नगरीकरण को निवेश (इनपुट) प्रदान किए हैं? चर्चा कीजिए। **(2014)**

उत्तर:

प्रश्न का विश्लेषण	
चर्चा कीजिए	विषय के विभिन्न मुद्दों या विचारों को ध्यान में रखते हुए, विस्तार से लिखें।
उपभागों की संख्या	दो उपभाग पहला भाग:सिंधु घाटी सभ्यता की शहरी आयोजना से वर्तमान युगीन नगरीकरण के लिए निवेश (इनपुट)। दूसरा भाग:सिंधु घाटी सभ्यता की संस्कृति से वर्तमान युगीन नगरीकरण के लिए निवेश (इनपुट)।
लिखने की विधि	बिंदु रूप में
निष्कर्ष का महत्व	आवश्यक नहीं है